1:3-18

"विश्वासयोग्य रहो"

वाक्याँश "मशाल पकड़ाना" प्राचीन यूनानी मशाल दौड़ से आरंभ हुआ, जिसमें एक जलती हुई मशाल एक धावक से दूसरे को पकड़ाई जाती थी। जब हम इस वाक्याँश को सुनते हैं तो हम में से बहुतेरे उस मशाल के बारी-बारी पकड़ाए जाने के विषय सोचते हैं जो ओलम्पिक खेलों की लपटों को यूनान से उन खेलों के स्थान तक पहुँचाने के लिए किया जाता है। आज हम इसे एक से दूसरे व्यक्ति को दायित्व सौंपने के लिए प्रयुक्त रूपक अलंकार के रूप में देखते हैं। 2 तीमुथियुस में पौलुस तीमुथियुस को "मशाल पकड़ा" रहा था; और उसने तीमुथियुस को निर्देश दिया कि वह इसे औरों को पकड़ाए (2:2) जिससे सुसमाचार की लपट अंधियारे और खतरनाक संसार में चमकती रहे (फिलि. 2:15)। वह चाहता था कि तीमुथियुस परमेश्वर के प्रति अपने समर्पण में (1:3-7) एवं उसके प्रति भी जो कुछ पौलुस उसे सिखा रहा था, विश्वासयोग्य रहे (1:8-18)।

"परमेश्वर का धन्यवाद हो" (1:3-7)

1:3-7 में तीमुथियुस को निर्देश देने के लिए पौलुस ने तीन बातों का उपयोग किया: स्मृतियां, नमूने (उदाहरण), और नियम (निर्देश)।[1]

विशेष स्मृतियाँ (1:3, 4)

3जिस परमेश्वर की सेवा मैं अपने बापदादों की रीति पर शुद्ध विवेक से करता हूँ, उसका धन्यवाद हो कि मैं अपनी प्रार्थनाओं में तुझे लगातार स्मरण करता हूँ, 4और तेरे आँसुओं की सुधि कर करके रात दिन तुझ से भेंट करने की लालसा रखता हूँ कि आनन्द से भर जाऊँ।

पौलुस ने 2 तीमुथियुस की आरंभिक आयतों में चार बार "स्मरण" करने के विषय कहा:

"तुझे लगातार स्मरण करता हूँ" (1:3). "स्मरण" μνεία *(म्नेइआ)* [2] का अनुवाद है।

"तेरे आँसुओं की सुधि कर करके" (1:4). "सुधि" उससे संबंधित शब्द: μιμνήσκω *(मिम्नेसको)*[3] से है।

"मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है" (1:5). जिस शब्द का अनुवाद "सुधि" (ὑπόμνησις, *ह्यूपोम्नेसिस)* हुआ है वह एक संधि शब्द है: एक संज्ञा जो μνεία (*म्नेइआ*) से संबंधित है, जिसके पहले ὑπό (*ह्यूपो*, "अधो") है।[4] यहाँ KJV में है "मैं स्मरण करता हूँ।"

"इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूँ" (1:6)। "सुधि" (ἀναμιμνήσκω, *अनामिम्नेसको)* μιμνήσκω *(मिम्नेसको)* से है, जिसके पहले ἀνά (*अना,* "पीछे")[5] लगाया गया है। यहाँ KJV में "मैं तुझे स्मरण करवाता हूँ।"

स्मृतियाँ महत्वपूर्ण हैं। वे भूतकाल के साथ हमारे बंधन हैं, और बहुत सीमा तक, परिभाषित करती हैं कि हम कौन हैं। पौलुस ने तीमुथियुस को प्रोत्साहित करने के लिए स्मृतियों का उपयोग करने में कोई संकोच नहीं किया।

आयत 3. पौलुस ने यह कह कर आरंभ किया, **जिस परमेश्वर की सेवा मैं अपने बापदादों की रीति पर शुद्ध विवेक से करता हूँ, उसका धन्यवाद हो।** "सेवा" λατρεύω *(लात्रेउओ)* से है जिसका नए नियम में प्रयोग "केवल धार्मिक सेवकाई करने के लिए" हुआ है।[6] *लात्रेउओ* "का अभिप्राय या तो आधिकारिक अथवा अनाधिकारिक सेवा या उपासना" हो सकता है।[7]

"बापदादों" πρόγονος *(प्रोगोनोस)* से है, जिसका 1 तीमुथियुस 5:4 में अनुवाद "माता-पिता" हुआ है। पौलुस का एक समर्पित यहूदी परिवार में कड़ाई से पालना-पोषण हुआ था। "आठवें दिन मेरा खतना हुआ, इस्राएल के वंश, और बिन्यामीन के गोत्र का हूं; इब्रानियों का इब्रानी हूं . . . और व्यवस्था की धार्मिकता के विषय में यदि कहो तो निर्दोष था" (फिलि. 3:5, 6; देखें प्रेरितों 24:14; 26:5)।

यह तथ्य कि वह परमेश्वर की सेवा "बापदादों की रीति पर" करता था पौलुस के अपने विरुद्ध लगे आरोप के खंडन का तर्क हो सकता है कि वह *releigio illicita* (अवैध धर्म) को, जो कि रोमी कानून के अन्तर्गत मृत्युदण्ड दिए जाने के योग्य अपराध था[8], प्रोत्साहन दे रहा था। वह इस बात पर दृढ़ था कि उसने कोई नया धर्म प्रारंभ नहीं किया था। उसके यहूदी बापदादे पुनरुत्थान में विश्वास रखते थे, और वह भी रखता था। उसके बापदादे आने वाले मसीहा की बाट जोह रहे थे, और वह भी जोह रहा था, और उसी मसीहा का प्रचार करता था। उसका बल सहित यह मानना था कि "एक यहूदी का मसीह की ओर परिवर्तन किसी भी अर्थ में उसके बापदादों के प्रति विश्वासघात नहीं था; वरन यह उसके बापदादों के विश्वास और आशा की परिपूर्णता था।"[9]

पौलुस ने आगे कहा **कि मैं अपनी प्रार्थनाओं[10] में तुझे लगातार[11] स्मरण करता हूँ।** पौलुस की "प्रार्थना सूची" में बहुत थे, जिन्हें वह प्रार्थनाओं में "लगातार" या "नियमित" (CJB) स्मरण करता था (देखें रोमियों 1:8; फिलि.

1:3; कुलु. 1:3)। अपनी रोमी कैद में सीमित, वह अब न प्रचार और न यात्रा कर सकता था; परन्तु वह प्रार्थना कर सकता था। उसकी प्रार्थना सूची में सबसे ऊपर के निकट (या संभवतः सबसे ऊपर) उसका प्रिय तीमुथियुस था।

आयत 4. पौलुस ने कहा [मैं] **तुझ से भेंट करने की लालसा रखता हूँ।** एक अंधियारे गड्ढे में पड़े हुए, बहुतेरों द्वारा छोड़ दिए गए (2 तीमुथियुस 1:15; 4:10, 11, 16), वह तीमुथियुस से "भेंट करने की लालसा" रखता था (1:4)। जिस शब्द का अनुवाद "लालसा" (ἐπιποθέω, *एपिपोथेओ)* हुआ है वह ποθέω (*पोथेओ*, "चाह रखना") और ἐπί *(एपि)*[12] जो उसे बल देने के लिए है, की संधि से बना है। उसका अर्थ होता है "किसी वस्तु के लिए अति तीव्र इच्छा रखना"।[13]

पौलुस ने आगे लिखा, **तेरे आँसुओं की सुधि कर करके।** हम इसके विषय निश्चित नहीं हैं कि पौलुस के मन में कौन सा आंसुओं वाला अवसर था। वह उस समय के बारे में सोच रहा होगा जब उसे पत्थरवाह करके लुस्त्रा में मरा समझ कर छोड़ दिया गया था (प्रेरितों 14:8, 19, 20) जो तीमुथियुस का निवास-स्थान था (प्रेरितों 16:1)। यह तब हो सकता था जब पौलुस ने तीमुथियुस को इफिसुस में छोड़ा (1 तीमु. 1:3)। हो सकता है कि जैसी उसे अपेक्षा था, पौलुस इफिसुस को लौट आया था (1 तीमु. 3:14), और जब पौलुस दोबारा जाने लगा तब एक अश्रुपूर्ण विदाई हुई होगी। हो सकता है कि जब समाचार आया कि रोम में मसीहियों पर अत्याचार हो रहा है, पौलुस उस शहर की ओर चला - मानो सिंह की मुँह में - और वह आंसुओं का अवसर रहा हो। कुछ भी हो, पौलुस एक ऐसे समय को स्मरण कर रहा था जब तीमुथियुस के आंसू उसके प्रति प्रेम और चिंता को दर्शाते थे।[14]

पौलुस तीमुथियुस को देखने की तीव्र लालसा रखता था, जिससे **कि आनन्द से भर जाऊँ।** यहाँ NEB में "जिससे मेरा आनन्द संपूर्ण हो" आया है। हम में से अधिकांश के लिए कोई न कोई ऐसा व्यक्ति है जिसके हमारे साथ होने से हम भला अनुभव करते हैं। पौलुस के लिए, वह व्यक्ति तीमुथियुस था।

दृढ़ उदाहरण (1:5)

[5]मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है, जो पहले तेरी नानी लोइस और तेरी माता यूनीके में था, और मुझे निश्चय है कि तुझ में भी है।

आयत 5. यूनानी लेख में आयत 3 से 5 तक एक ही वाक्य है, अर्थात पौलुस यह लिखते समय: **मुझे तेरे उस निष्कपट विश्वास की सुधि आती है, जो पहले तेरी नानी लोइस और तेरी माता यूनीके में था, और मुझे निश्चय है कि तुझ में भी है अपने विचार को जारी रखे हुए था।** जैसे पहले ध्यान किया गया है, "सुधि" ὑπόμνησις *(ह्यूपोम्नेसिस)* से है, यहाँ जिसकी संधि λαμβάνω (*लम्बनो*, "लेना" या "प्राप्त करना") के साथ की गई है। इसका शब्दार्थिक अनुवाद होगा "स्मरण करवाना प्राप्त किया गया।"[15] संभवतः कोई व्यक्ति या वस्तु (एक पत्र?)

ने पौलुस को लुस्त्रा की दो भक्त स्त्रियों और उनके "निष्कपट विश्वास" को स्मरण करवाया। पौलुस से मिलने से पहले, उन्हें सच्चे परमेश्वर में विश्वास था, और पौलुस से मिलने के बाद उन्होंने यीशु के परमेश्वर का पुत्र होने पर विश्वास किया। उनका विश्वास "निष्कपट" (ἀνυπόκριτος, *अनुपोक्रितोस)* - शब्दार्थ में, "बिना पाखण्ड के," विशुद्ध था।[16] इसके अतिरिक्त वह उन "में था" (ἐνοικέω, *एनओइकिओ);* अर्थात अल्पकालिक या अस्थायी नहीं, परन्तु उनमें स्थाई रीति से "घर बनाए हुए" था।[17]

पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा के समय, वह लुस्त्रा लौट कर आया (प्रेरितों 16:1)। "वहां तीमुथियुस नाम एक चेला था, जो किसी विश्वासी यहूदिनी [यूनीके] का पुत्र था" (प्रेरितों 16:1)। प्रेरितों में "विश्वासी" मसीहियों के लिए प्रयोग किया जाता है (देखें प्रेरितों 16:15; NIV)। संभवतः यूनीके और उसका पुत्र तीमुथियुस का परिवर्तन पौलुस द्वारा उसकी प्रथम मिशनरी यात्रा के समय हुआ था। प्रेरितों 16 में नानी लोइस का उल्लेख नहीं है, परन्तु संभवतः वह भी उसी समय विश्वासी बनी होगी। संभवतः वह अपनी बेटी के साथ रहती थी।

उस संस्कृति में, बच्चों को पढ़ाना, मुख्यतः पिता का दायित्व होता था (देखें इफि. 6:4); परन्तु तीमुथियुस "का पिता यूनानी था" (प्रेरितों 16:1), और प्रत्यक्षतः यहूदी मत के प्रति सहानुभूति नहीं रखता था।[18] इसलिए यह दायित्व यूनीके और लोइस पर पड़ा। उन्होंने इस दायित्व की उपेक्षा नहीं की। "बचपन से" उन्होंने "पवित्र-शास्त्र" तीमुथियुस को सिखाया (2 तीमु. 3:15), और उसमें वही विश्वास डाला जो उनमें था।

इसलिए पौलुस उसके विश्वास के लिए कह सका "मुझे निश्चय है कि तुझ में भी है।" जिस शब्द का अनुवाद "मुझे निश्चय है" हुआ है वह πείθω *(पेइथो)* है, जिसका अर्थ होता है "किसी के संदर्भ में निश्चित हो जाना, दृढ़ होना, निःसंदेह।"[19] NIV में है "मैं विश्वस्त हूँ।" NEB में है "मैं भरोसा रखता हूँ।" डेल हार्टमैन ने इसे इस प्रकार व्यक्त किया: यूनीके और लोइस ने तीमुथियुस पर "विश्वास की उंगलियों" के चिन्ह छोड़े।[20]

गंभीर नियम (1:6, 7)

[6]इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूँ कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है प्रज्वलित कर दे। [7]क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है।

अध्याय 1 में, पौलुस ने तीमुथियुस को चार निर्देश दिए:

1:6 - "परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है प्रज्वलित कर दे।"

1:8 - "इसलिये हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका कैदी हूँ, लज्जित न हो।"

1:13 - "जो खरी बातें तू ने मुझ से सुनी हैं उनको उस विश्वास और प्रेम के साथ, जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख।"

1:14 - "इस अच्छी धरोहर की रखवाली कर।"

आयत 6. प्रथम निर्देश, तीमुथियुस के उसके विश्वास में भरोसे से संबंधित है। **पौलुस ने लिखा, इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूँ कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है प्रज्वलित कर दे।** हम इसके विषय निश्चित नहीं हो सकते हैं कि वह "वरदान" क्या था। कुछ लेखक ज़ोर देते हैं कि वह कोई आश्चर्यकर्म का वरदान था।[21] अन्य उतने ही दृढ़ हैं कि वह आश्चर्यकर्म का वरदान नहीं था।

हमने इसी प्रकार की भाषा को 1 तीमुथियुस 4:14 में भी देखा है: "उस वरदान से जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त न रह।" हमने सुझाव दिया था कि उस आयत में कहा गया "वरदान" संभवतः कोई आश्चर्यकर्म का वरदान नहीं था, वरन अधिक संभावना है कि लुस्त्रा के अगुवों द्वारा उस पर हाथ रखे जाने से मिला सेवकाई का वरदान था, जो पौलुस के मिशनरी दल का भाग होने के लिए उसे पृथक करता था। दूसरा तीमुथियुस 1:6 में उसी अवसर के बारे में कहा जा रहा होगा, जब पौलुस भी उस औपचारिक अनुष्ठान में अगुवों के साथ सम्मिलित हुआ होगा। जे. बी. फिलिप्प्स ने इस वाक्य का भावानुवाद इस प्रकार से दिया: "मैं तुझे अब स्मरण दिलाता हूँ कि उस भीतरी अग्नि को दहका जिसे परमेश्वर ने तुझे अभिषेक के समय प्रदान किया था।" जेम्स मैक्नाईट का 1 तीमुथियुस 4:14 का विस्तृत अनुवाद/व्याख्या 2 तीमुथियुस 1:6 से लिए गए विचार भी सम्मिलित करता है:

> *उस वरदान के प्रति जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा* लुस्त्रा में *मेरे तथा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था,* जिसके द्वारा उन्होंने तब तेरे सुसमाचार प्रचारक होने का अनुमोदन किया था, *निश्चिन्त मत रह।*[22]

किन्तु संभव है कि वह वरदान आश्चर्यकर्म का हो, जो उस समय या बाद में प्रदान किया गया। ऐसे वरदान प्रेरितों के हाथों से प्रदान किए जाते थे (देखें प्रेरितों 8:18), और पौलुस एक प्रेरित था (2 तीमु. 1:1)। पौलुस ने औरों को आश्चर्यकर्म के वरदान प्रदान किए थे (देखें प्रेरितों 19:6), इसलिए, यदि वह ऐसा चाहता और यदि उसको लगता कि ऐसा करना परमेश्वर की इच्छा में है, तो वह तीमुथियुस को भी एक प्रदान कर सकता था।

परमेश्वर से मिला उसका वरदान जो भी हो, तीमुथियुस को उसे *उपयोग* करना था और *विकसित* करना था। उसके दायित्व को निर्देश "परमेश्वर के उस वरदान को जो तुझे मिला है प्रज्वलित कर दे" के द्वारा प्रमुख किया गया है। "प्रज्वलित कर दे" संयुक्त यूनानी शब्द ἀναζωπυρέω *(अनाज़ोप्यूरियो)* से है जो ἀνά (*अना*, "ऊपर" या "पुन") तथा ζωός (*ज़ूस*, "जीवित") तथा πυρεύω (*प्यूरियो*, "अग्नि प्रज्जवलित करना") से है।[23] इसका शब्दार्थ है "फिर से

प्रज्वलित करना।"[24] इस भाषा का यह तात्पर्य नहीं है कि तीमुथियुस के "विश्वास की लपट" बुझने को थी। पौलुस कदापि किसी ऐसे व्यक्ति को "निष्कपट विश्वास" (2 तीमु. 1:5) वाला, ऐसा जिसे वह देखने की लालसा रखता है, जिससे वह "आनन्द से भर जाए" (1:4), नहीं कहता यदि उस व्यक्ति की आस्था दुर्बल हो रही होती। डॉनाल्ड गथरी ने लिखा, "ऐसा कोई सुझाव नहीं है कि . . . तीमुथियुस ने अपनी पहली सी आग को खो दिया था, यद्यपि निःसंदेह, प्रत्येक मसीही के समान, उसे उस आग को पूरी लपट के साथ प्रज्ज्वलित रखने के लिए किसी प्रोत्साहक की आवश्यकता हो सकती थी।"[25]

पौलुस के आग्रह को पढ़ने से मेरा मन उस समय की ओर गया जब मैं किशोर था। मैं जब भी घर से बाहर जाता, मेरी माँ सदा ही पुकार कर कहतीं, "अच्छे रहना।" उनके शब्दों का यह अभिप्राय नहीं था कि मैं बुरा बन गया था, परन्तु वे मुझे प्रोत्साहित करने के लिए होते थे कि मैं अच्छा बना रहूं। होमर ए. केंट जूनियर ने सुझाव दिया, क्योंकि यह निर्देश वर्तमान काल में है, पौलुस तीमुथियुस से आग्रह कर रहा था कि "वह जो कर रहा है उसे करता रहे।"[26]

2 तीमुथियुस में पौलुस ने कष्ट, सताव, और मृत्यु तक के विषय लिखा। तीमुथियुस की लपट को बुझाने के लिए शैतान जो कुछ कर सकता था वह अवश्य करता। पौलुस अपने युवा मित्र से प्रभावी रीति से यह कह रहा था कि, "उसे ऐसा मत करने देना! अपनी ज्वाला को तीव्रता से प्रज्ज्वलित रखना।" हम सभी को इस प्रोत्साहन की आवश्यकता है। कुछ को इसलिए चाहिए क्योंकि वे कठोर सताव से निकल रहे हैं; किन्तु चाहे हमारे साथ यह स्थिति नहीं भी है, तो भी मसीहियत की ऐसी आरामदेह नकल में पड़ जाना सरल होता है, जहाँ हमारी ज्वाला धीमी जलती रहती है। पौलुस हम सब से कहता: "उसे हिलाओ! उसे प्रज्ज्वलित होने दो!"

आयत 7. यह आयत पौलुस के विचार: **क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा दी है**, को जारी रखती है। व्याख्याकर्ताओं में वही सामान्य चर्चा है कि आत्मा से तात्पर्य पवित्र-आत्मा से है कि नहीं। कुछ अनुवादों में "पवित्र-आत्मा" है (NAB; CJB; CEV; NIV)। यह देखना रोचक है कि यह आयत अन्दर निवास करने के पवित्र-आत्मा के कार्य के कितनी समानान्तर है (1:14)। इफिसियों 3:16 में पौलुस ने प्रार्थना की "वह . . . तुम्हें यह दान दे, कि तुम उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में *सामर्थ्य* पाकर बलवन्त होते जाओ" (बल दिया गया है)। दो अन्य गुण - *"प्रेम और संयम"* - गलतियों 5:22, 23 में दिए गए "आत्मा के फलों" में से प्रथम और अंतिम हैं।[27] किन्तु अधिकांश अनुवादों में "आत्मा" ही है।[28] जहाँ तक वाक्य के प्राथमिक बल की बात है, इससे कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता है कि आत्मा, पवित्र आत्मा है कि नहीं। पौलुस यह स्पष्ट कर रहा था कि यदि किसी में "भय की आत्मा" है, तो वह परमेश्वर से *नहीं* आई है।

वाक्यांश "भय की आत्मा . . . नहीं" से बहुत से लेखक यह निष्कर्ष लगाते हैं कि तीमुथियुस बहुत शर्मीला और भीरु था। उनकी, पौलुस के शब्दों की व्याख्या

है, "तीमुथियुस, भीरु होना छोड़ दे! उठकर खड़ा हो, पौरुष दिखा!" संभवतः यह तो सत्य है कि तीमुथियुस पौलुस के समान निर्भीक तो नहीं था (कौन हो सकता था?); परन्तु, जैसे पहले बल दिया गया है, तीमुथियुस की भीरुता की बात को सामान्यतः आवश्यकता से अधिक कहा जाता है।

जिस यूनानी शब्द का अनुवाद "भय" (δειλία, *डेइलिया)* हुआ है, वह उससे अधिक प्रबल है जिसका संकेत अंग्रेज़ी अनुवाद से मिलता है। *डेइलिया* का अभिप्राय होता है "मानसिक और नैतिक सामर्थ्य का अभाव," "कायरता।"[29] KJV में "भय" है। निःसंदेह कोई भी यह सुझाव नहीं देगा कि तीमुथियुस कायर था। एक ऐसा पुरुष जो पौलुस के साथ पन्द्रह वर्ष तक यात्रा करता रहा और उसके साथ हर प्रकार के दुर्व्यवहार को सहता रहा, उसे कायर तो नहीं समझा जा सकता है। ऐसा व्यक्ति जिसे बहुत कठिन स्थानों में भेजने के लिए पौलुस भरोसा रख सकता था, वह कायर तो नहीं हो सकता है।

संभवतः एक अन्य भली समझ यह होगी कि पौलुस तीमुथियुस को डांट नहीं रहा था, वरन उसे सचेत कर रहा था। तीमुथियुस के अधिक पीछे हटने और संवेदनशील स्वभाव को ध्यान रखते हुए, पौलुस इस बात से अवगत था कि यदि उसे उस समय रोम में चल रहे घृणा के कड़ाहे में फेंक दिया जाता तो क्या हो सकता था। प्रभावी रीति से वह उस युवा प्रचारक से कह रहा था, "सचेत रह!"

फिर पौलुस ने तीमुथियुस को कठिन समयों में परमेश्वर की सहायता को स्मरण दिलाया: "परमेश्वर ने हमें . . . सामर्थ्य और प्रेम और संयम की आत्मा *दी है"* (बल दिया गया है)। हमारे अध्ययन में यह पहली बार है कि हमने "सामर्थ्य" (δύναμις, *ड्यूनमिस)* का सामना किया है, यद्यपि हमने इससे संबंधित शब्दों को देखा है।[30] आर. सी. एच. लेंस्की ने सुझाया कि यह "सामर्थ्य" किसी खतरे के समय में मात्र "साहस" या "वीरता" नहीं है; यह उससे कहीं बढ़कर है; वरन यह अभिप्राय देती है "कार्य करते रहने की सामर्थ्य, डटे रहने, सब कुछ सह लेने, कष्ट उठाने, मर जाने - जयवंत, विजयी सामर्थ्य, जीवित अग्नि की न बुझने वाली ज्वाला।"[31]

जिस प्रकार का प्रेम 1:7 में है, ἀγάπη *(अगापे)*, हम उससे परिचित हैं।[32] यीशु ने प्रेम को शिष्य होने के बिल्ले के समान देखा: "यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो" (यूहन्ना 13:35)। मसीही के जीवन में प्रेम के महत्व पर बल दिया जाना कभी भी आवश्यकता से अधिक हो ही नहीं सकता है।

नए नियम में यही एकमात्र स्थान है जहाँ पर शब्द σωφρονισμός (*सोफ्रोनिसमॉस*, "अनुशासन") पाया जाता है।[33] इसमें σῶς (*सोस*, "सुरक्षित") को φρήν (*फ्रेन*, "मन") के साथ जोड़ने से यह "स्वस्थ मन" का संकेत देता है। *वाइन्स कम्प्लीट एक्सपोज़िट्री डिक्शनरी* के अनुसार यह मुख्यतः "एक स्वस्थ मन, या आत्म-संयम के लिए पुकारा जाना है।"[34] लेंस्की ने इसे कहा "एक स्वस्थ, संतुलित मन का आचरण," और ध्यान किया कि "यद्यपि इस गुण की हर समय आवश्यकता होती है, [इसकी] सबसे अधिक आवश्यकता खतरनाक समयों में

होती है।"[35] "खतरनाक समय" उस समय का सटीक वर्णन हैं जब 2 तीमुथियुस को लिखा गया।

सामर्थ्य, प्रेम और संयम ऐसे गुण हैं जिनकी हम सभी को आवश्यकता है। ये तीनों साथ चलते हैं। सामर्थ्य का प्रेम द्वारा निर्वाह तथा संयम के साथ नियंत्रण करना चाहिए। यदि हम अपने आप को पवित्र-आत्मा की प्रेरणा से लिखे गए वचन के पालन के लिए समर्पित करते हैं, तो पवित्र-आत्मा हम में इन सद्‌गुणों को विकसित करने में सहायक होगा (गलातियों 5:22, 23)।

"लज्जित न हो" (1:8-18)

पाप के साथ-साथ लज्जा भी इस संसार में आई। प्रथम जोड़े के पाप में गिरने से पहले, "आदम और उसकी पत्नी दोनों नंगे थे, पर लजाते न थे" (उत्पत्ति 2:25)। जब वे पाप में गिरे, तो उन्होंने बच्चों जैसी निर्दोषता खो दी और नंगेपन से उत्पन्न होने वाली लज्जा को समझा (उत्पत्ति 3:10; देखें प्रका. 16:15)।

बाइबल में "लज्जा" को कर्म कारक और कर्ता कारक, दोनों आशयों के रूप में प्रयोग किया गया है। कर्म कारक के संदर्भ में, यह दूसरे लोगों की दृष्टि में शर्मिंदगी या अपमान दर्शाता है, जबकि, कर्ता कारक के संदर्भ में, यह लज्जा या शर्मिंदगी को दर्शाता है। "लज्जित करना" और "लज्जा आना" दो अलग-अलग बात है।

मानवजाति के लिए परमेश्वर की योजना में लज्जा एक तर्क संगत उद्देश्य का कार्य करता है। जब हम गलत कार्य करते हैं, तो परमेश्वर द्वारा दिया गया विवेक हमें दोषी ठहराता है, यहाँ तक कि यह हमें शर्मिंदगी का अनुभव भी कराता है। यदि हम झूठ बोलते हैं, गपशप करते हैं, चोरी करते हैं, किसी को नुकसान पहुँचाते हैं, यौन संबंधी पाप करते हैं, या फिर किसी अन्य पाप के दोषी हैं, तो हमें शर्मिंदा होना चाहिए। लज्जा हमें हमारे पापों से पश्चाताप करने की क्षमता प्रदान करता है और क्षमादान के लिए परमेश्वर के पास जाने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

समस्या यह है कि लज्जा के प्रति हमारी क्षमता सही दिशा से अक्सर भटक जाती है। कुछ लोग अपने पापमय कार्यों के प्रति लज्जा भी अनुभव नहीं करते हैं। उनका विवेक कठोर हो गया है (1 तीमु. 4:2) कि वे "अपनी लज्जा की बातों पर घमण्ड करते हैं" (फिलि. 3:19; देखें यिर्म. 6:15)। इसके विपरीत, हम उस समय लज्जा अनुभव करते हैं जब हमें लज्जा अनुभव नहीं करनी चाहिए। पौलुस ने इसी समस्या को संबोधित किया है। लज्जा की कड़ी दूसरा तीमुथियुस की पत्री के पहले अध्याय में एक धागे के समान पाई जाती है। वह सुसमाचार से नहीं लजाता था और उसने उनेसिफुरुस की लज्जा उठाने के लिए सराहना की है, और उसने दूसरे मसीहियों से यही विनती की है कि वे लज्जित न हों (1:8, 12, 16)।

"हे तीमुथियुस, सुसमाचार या मेरे कारण लज्जित न हो" (1:8-11)

8इसलिये हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका कैदी हूँ, लज्जित न हो, पर उस परमेश्वर की सामर्थ्य के अनुसार सुसमाचार के लिये मेरे साथ दुःख उठा 9जिसने हमारा उद्धार किया और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर उसके उद्देश्य और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है, 10पर अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा प्रकाशित हुआ, जिसने मृत्यु का नाश किया और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया। 11जिस के लिये मैं प्रचारक, और प्रेरित, और उपदेशक भी ठहरा।

आयत 8 से 11 तक यूनानी भाषा में एक ही वाक्य है। अनेक विद्वान इस अनुच्छेद और इफिसियों 2 और 3 के बीच, कई समानताएं पाते हैं।[36] निश्चय तीमुथियुस इफिसुस में था, जहाँ भाइयों के पास निस्संदेह "इफिसियों की पत्री" की प्रति भी रही होगी। संभवतः उस पत्री के भागों को उस कलीसिया में बार-बार पढ़ा जाता होगा। दूसरा तीमुथियुस 1:8-11 के विचारों और शब्दों से तीमुथियुस और इफिसुस के मसीही परिचित रहे होंगे।

जब हम इन आयतों का अध्ययन करते हैं, तो इस अध्याय में *लज्जित न होना* और दुःख उठाने की इच्छा जताना, के बीच एक संबंध देखते हैं: "लज्जित न होना, . . . पर मेरे साथ दुःख उठा" (1:8)। बारहवीं आयत में, पौलुस ने कहा, "इस कारण मैं इन दुःखों को भी उठाता हूँ, पर लजाता नहीं . . .।" सोलहवीं आयत में हमें बताया गया है कि उनेसीफुरूस "[पौलुस] की जंजीरों से लज्जित न हुआ" और इसकी विशेष संभावना यह है कि जिसके परिणामस्वरूप उसको दुःख उठाना पड़ा होगा। पौलुस के मन में देखें तो हमें मिलेगा कि सुसमाचार के कारण दुःख उठाने के लिए तैयार न होना, सुसमाचार से लज्जित होना दिखाता है।

आयत 8. पौलुस ने कहना जारी रखा, **इसलिये** [चूँकि प्रभु ने हमें सामर्थ, प्रेम, और अनुशासन प्रदान किया है] **हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका कैदी हूँ, लज्जित न हो, पर उस परमेश्वर की सामर्थ्य के अनुसार सुसमाचार के लिये मेरे साथ दुःख उठा।** "लज्जित होना" (ἐπαισχύνομαι, *एपाइखूनोमाई* से *उद्धृत*) "एक संयुक्त क्रिया है जिसका अर्थ, इसके साधारण रूप से कहीं अधिक है।"[37] यह इस अध्याय की कुँजी है (1:8, 12, 16)।[38] यह निर्देश यह सुझाव नहीं प्रस्तुत करता है कि तीमुथियुस लज्जित होने के लिए दोषी ठहरा है, बल्कि यह तो लज्जित न होने के लिए सामान्य निर्देश था।

"गवाही" (μαρτύριον, *मारटूरियोन*[39]) सत्य की संस्तुति या घोषणा है। "हमारे प्रभु की गवाही" या तो यीशु के *बारे में* (देखें NIV) गवाही या फिर नये नियम की पुस्तकों में उसके *द्वारा दी गई* गवाही की ओर संकेत करता है। किसी भी परिस्थिति में, इसका अंतरिम परिणाम एक ही है। इस अनुच्छेद में, "गवाही," "सुसमाचार" के साथ विनिमेयता के अनुसार प्रयोग की गई है: इसके

प्रभाव में पौलुस ने कहाः "हमारे प्रभु की *गवाही* से . . . , लज्जित न हो, पर . . . *सुसमाचार* के लिये मेरे साथ दुःख उठा।" हमें रोमियों 1:16 में पौलुस के इन शब्दों को स्मरण कराया गया हैः "क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता *[एपाइखूनोमाइ]*, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिये, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ्य है।"

पौलुस ने तीमुथियुस से भी आग्रह किया, "इसलिये हमारे प्रभु की गवाही से, और मुझ से जो उसका कैदी हूँ, लज्जित न हो।" रोमी सरकार ने पौलुस को नीरो का कैदी समझा; लेकिन उसने अपने आपको मसीह का कैदी माना, जो उसके उद्देश्य के लिए बंधुआ है (2:8, 9; देखें इफि. 3:1; 4:1; फिलेमोन 1, 9)।

कैदी पौलुस से लज्जित होने को दो रूपों में व्यक्त किया जा सकता है। सबसे पहले इस बात से लज्जित होना कि कलीसिया का एक अगुवा कैद में है। हम दूसरे लोगों की बातचीत की कल्पना कर सकते हैं: "मैंने पौलुस और अन्य मसीहियों के बारे में भयंकर बात सुनी है। यदि उसने बुरा कार्य न किया होता तो वह कैद में नहीं होता!" रोनाल्ड ए. वार्ड ने लिखा कि "अपराधियों की जंजीरों में कलीसिया का अगुवा, अन्य लोगों के लिए, स्वयं प्रभु के मृत्युदण्ड के समान, ठोकर का कारण, धोखाधड़ी करने वाला हो सकता है।"[40] दूसरी बात, लज्जित होने का परिणाम, कैदी से अपने आपको दूर रखना है। यह पौलुस के साथ हुआ (4:10, 11, 16)। फिर, वह तीमुथियुस को यह नहीं कह रहा था कि वह उससे लज्जित होना छोड़ दे, बल्कि किसी को उससे लज्जित होने की आवश्यकता ही नहीं है।[41]

पौलुस ने तीमुथियुस को **सुसमाचार में उसके साथ दुःख उठाने के लिए लिए कहा**। "उसके साथ दुःख उठाना" συγκακοπαθέω *(सुंकाकोपाथेओ)* से उद्धृत है। यह शब्द σύν (*सुन*, "साथ"), κακός (*काकोस*, "दुष्ट, नुकसान"), और πάσχω (*पास्खो*, "दुःख उठाने") के संयोजन से बना है; इसका अर्थ "कठिन परिश्रम करके दुःख उठाना" है।[42] हमें यह ज्ञात नहीं है कि तीमुथियुस आवश्यकता के समय पौलुस के साथ था या नहीं, परंतु हमें इतना ज्ञात है कि उसने सुसमाचार के लिए दुःख उठाया। उसके जीवन के किसी पड़ाव में, वह कैदी भी रहा (इब्रा. 13:23)। तब, किसी प्रेरणा रहित स्रोत के अनुसार, वह 90 की दशक के डोमिशियन के सताव के दौरान मारा गया था।[43]

आयत **परमेश्वर की सामर्थ्य** *[डूनामिस]* **के अनुसार** वक्तव्य के साथ समाप्त होती है। NEB में ऐसा लिखा है "in the strength that comes from God" (परमेश्वर की ओर से आने वाली सामर्थ में)। कभी-कभी परमेश्वर हमें हमारे दुःखों से बचाता है (प्रेरितों. 12 के अनुसार जैसे उसने पतरस के साथ किया था), और कभी-कभी वह हमें दुःख उठाने की सामर्थ्य प्रदान करता है (जैसा उसने पौलुस के साथ कैद में रहते हुए किया था)।

आयतें 9, 10. सुसमाचार के प्रति लज्जित होने का कौन प्रतिरोध करेगा? किसी को सुसमाचार के लिए दुःख उठाने से कौन प्रेरित करेगा? सुसमाचार क्या है उसके बारे में समझना। आयतें 9 और 10 "[पौलुस] के अन्यत्र लेखों में सबसे संक्षिप्त और विस्तृत सुसमाचार का सार" समाविष्ट है[44] और हमें इसमें गर्व करने

के कई अन्य कारण देता है:

> **जिसने हमारा उद्धार किया और पवित्र बुलाहट से बुलाया, और यह हमारे कामों के अनुसार नहीं; पर उसके उद्देश्य और उस अनुग्रह के अनुसार है जो मसीह यीशु में सनातन से हम पर हुआ है, पर अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रगट होने के द्वारा प्रकाशित हुआ, जिसने मृत्यु का नाश किया और जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया।**

इन दो आयतों में इतनी बातें ठूंस-ठूंस कर भर दी गई है कि हमें उनको बारी-बारी से उधेड़ना होगा।

परमेश्वर ने "हमारा उद्धार किया है।" यह उसकी योजना थी और यह वही है जो हमें क्षमा प्रदान करता है। "हम" सभी मसीहियों को सम्मिलित करता है।

परमेश्वर ने पवित्र बुलाहट से "हमें बुलाया है।" वह हमें अपने सुसमाचार के द्वारा बुलाता है (2 थिस्सलु. 2:14)। नये नियम की पत्रियों में "बुलाहट" "सदैव प्रभावी और सफलतापूर्वक बुलाहट" को संबोधित करती है।[45] दूसरे शब्दों में, यह उन पर लागू होती है जिन्होंने परमेश्वर की बुलाहट के प्रति "हाँ" कही है।[46]

परमेश्वर ने हमें "पवित्र बुलाहट" से बुलाया है। यह बुलाहट इसलिए पवित्र है क्योंकि यह पवित्र परमेश्वर की ओर से है (1 पतरस 1:16; देखें लैव्य. 11:44), और यह पवित्र बुलाहट है क्योंकि यह हमें पवित्र जीवन जीने के लिए बुलाती है (1 थिस्स. 4:7)।

हमारा अद्भुत उद्धार "हमारे कामों के अनुसार नहीं" था। उद्धार पाने के लिए हमें परमेश्वर की इच्छा की आज्ञा माननी है (मत्ती 7:21; इब्रा. 5:9), लेकिन ऐसा करके हम उद्धार नहीं कमाते हैं। अन्यथा इसकी घोषणा करने के द्वारा पूरे रोमियों की पत्री को पुनः लिखना पड़ता।

बल्कि, हमारा उद्धार "उसके उद्देश्य और अनुग्रह के अनुसार" है। यह मनुष्य की योजना या उद्देश्य नहीं है, परंतु परमेश्वर की योजना और उद्देश्य है। "उद्देश्य" πρόθεσις *(प्रोथेसिस)* से उद्धृत है, जो πρό (*प्रो*, "आगे") और τίθημι (*टिथेमी*, "रखना") का संयुक्त रूप है। इस शब्द का यथा अर्थ "जो पहले से योजनाबद्ध किया गया है"[47] को "स्थापित करना"[48] है।

इससे बढ़कर, यह "उसके अनुग्रह के अनुसार है।" हमें अपने कामों के द्वारा उद्धार नहीं मिला है, बल्कि परमेश्वर की दया और अनुग्रह से ही हमारा उद्धार हुआ है (इफि. 2:8, 9; तीतुस 3:5)। "मसीह यीशु में यह अनुग्रह हमें अनंतकाल से दिया गया है।"[49] उद्धार की नदी का स्रोत जानने के लिए हमें पिन्तेकुस्त से भी पहले, सीनै पर्वत पर व्यवस्था दिए जाने से भी पहले, परमेश्वर की अब्राहम को दी गई प्रतिज्ञा देने से भी पहले, आदम और हव्वा की सृष्टि होने से भी पहले - सनातन काल में जाना होगा। समय प्रारंभ होने से पहले, परमेश्वर के पास एक योजना थी (इफि. 3:9, 11)। यह योजना "जो मसीह यीशु में हैं" उन पर अनुग्रह प्रकट करना था। "मसीह यीशु में" होने का अर्थ यह है कि मसीह के साथ एक

संबंध स्थापित करना है अर्थात् "उसमें" पाए जाने के द्वारा ही इस बात की निकटता का अनुभव किया जा सकता है। हम "उसमें" कैसे पाए जा सकते हैं? पौलुस ने गलातियों 3:26-28 में इसका विश्लेषण किया है:

> क्योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहन लिया है। अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतंत्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो।

जिनका "मसीह यीशु में" उद्धार हुआ है, पौलुस ने उनके लिए "हम" शब्द का प्रयोग किया है: उद्धार "हमको दिया गया था।" सृष्टि के आरंभ से पहले, परमेश्वर ने हमसे प्रेम किया और उसने अपने पुत्र को हमारे लिए भेजने की ठान ली थी ताकि हमारा उद्धार हो सके!

परमेश्वर की योजना सनातन काल में बनाई गई थी। पुराने नियम काल में इसका धुंधला विवरण दिखाई देता है, लेकिन "अब हमारे उद्धारकर्ता मसीह यीशु के प्रकट होने के [φανερόω, *फानेरोओ* [50]] द्वारा प्रकाशित हुआ है।" यीशु के "प्रकट होने" (ἐπιφάνεια, *इपिफानैया*[51]) में उसका देहधारण और इस पृथ्वी में उसका जीवनकाल निहित है। वह "देखा जाने वाला और छुआ जाने वाला" बना।[52]

जब यह "देखा जाने वाला और छुआ जाने वाला," यीशु मृत्यु में से जिलाया गया, तो उसने "मृत्यु को नाश कर दिया।"[53] नाश करने के लिए यूनानी शब्द καταργέω *(काटारगेओ)*, κατά (*काटा*, "नीचे") और ἀργός (*आर्गोस*, "निष्क्रिय") के संयोजन से बना है। इसका अर्थ "अस्तित्व से रूकना" नहीं है, बल्कि "निष्क्रियता तक ठहरना" है।[54] यीशु ने मृत्यु की सामर्थ को तोड़ दिया।[55] मानवजाति पर जिस प्रकार मृत्यु अधिकार जताती थी उसने उसे तोड़ डालाः वह "मांस और लहू" बना, "ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को निकम्मा कर दे; और जितने मृत्यु के भय के मारे जीवन भर दासत्व में फँसे थे, उन्हें छुड़ा ले" (इब्रा. 2:14, 15)।

पहला कुरिंथियों 15:55 में, पौलुस का इस विचार को व्यक्त करने का तरीका इस प्रकार है कि मसीह ने मृत्यु के "डंक" को बाहर निकाल दिया। इसी विचार को व्यक्त करने का दूसरा तरीका यह हो सकता है कि उसने शेर के मुँह से दाँत निकाला। (एक डंक रहित बिच्छू या दाँत रहित शेर अधिक हानि नहीं पहुँचा सकते हैं।)

जब हम "मृत्यु को नाश किया" पढ़ते हैं, तो हमें 2 तीमुथियुस की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखना होगा। मसीहियों को पकड़वाया जाता था और उनकी हत्या कर दी जाती थी। पौलुस भी शीघ्र मृत्युदण्ड की प्रतीक्षा कर रहा था; फिर, जब वह हत्यारे की तलवार की अपेक्षा कर रहा था, तो मृत्यु के बारे में नहीं बल्कि वह इस पृथ्वी से "कूच" के बारे में सोच रहा था (4:6) - अपने प्रभु के पास कूच कर जाने के लिए लालायित था (फिलि. 1:23)।

पौलुस यह कहते हुए जारी रखता है कि मसीह ने "जीवन और अमरता को उस सुसमाचार के द्वारा प्रकाशमान कर दिया।" यहाँ "जीवन" (ζωή, *जोए)* को "अनंत जीवन," परमेश्वर के साथ जीने के संदर्भ में प्रयोग किया गया है।[56] मसीही लोग यहाँ वास्तविक जीवन से आशीषित हैं और इसके बाद वे मसीह के साथ अनंत जीवन का उपभोग करेंगे। "अमरता" (ἀφθαρσία, *आफथारसिया)* का तात्पर्य "अविनाशी" है; इसके लिए प्रयोग किया गया यूनानी शब्द φθείρω (*थैरो,* "भ्रष्ट") है, जिसको यहाँ α *(ए)* द्वारा नकारात्मक रूप से प्रस्तुत किया गया है। इस विषय पर एक अच्छा टीका 1 कुरिंथियों 15:51-57 है:

> देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ: हम सब नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएँगे, और यह क्षण भर में, पलक मारते ही अन्तिम तुरही फूँकते ही होगा। क्योंकि तुरही फूँकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएँगे, और हम बदल जाएँगे। क्योंकि अवश्य है कि यह नाशवान देह अविनाश को पहन ले, और यह मरणहार देह अमरता को पहन ले। और जब यह नाशवान अविनाश को पहन लेगा, और यह मरणहार अमरता को पहन लेगा, तब वह वचन जो लिखा है पूरा हो जाएगा: "जय ने मृत्यु को निगल लिया। हे मृत्यु, तेरी जय कहाँ रही? हे मृत्यु, तेरा डंक कहाँ रहा?" मृत्यु का डंक पाप है, और पाप का बल व्यवस्था है। परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा हमें जयवन्त करता है।

"परमेश्वर ने हमें सबसे बड़ी दुष्टता से बचा लिया और उसने हमें सबसे बड़ी आशीष का अधिकारी ठहरा दिया है।"[57] हम कैसे जान सकते हैं कि यह सत्य है? यह "सुसमाचार के द्वारा हमारे ध्यान में लाया गया है।"

आयत 11. पौलुस ने यह कहकर इस वाक्य को समाप्त किया, **जिस के लिये** [अर्थात् सुसमाचार के खातिर] **मैं प्रचारक, और प्रेरित, और उपदेशक भी ठहरा।**[58] पौलुस ने इन्हीं शब्दों का प्रयोग 1 तीमुथियुस 2:7 में भी किया है।[59] यद्यपि, वह अपना अधिकार प्रमाणित करने के लिए ईश्वरीय नियुक्ति का विचार प्रस्तुत नहीं कर रहा था, बल्कि यह अभिव्यक्त करने के लिए कि परमेश्वर के संदेशवाहक ("प्रेरित") के रूप में सुसमाचार प्रचार करने के लिए ("प्रचारक") और मान्यता प्राप्त संचारक ("शिक्षक") के लिए उसका चुनाव हुआ था।

"मैं अपने दुःखों से लजाता नहीं हूँ" (1:12-14)

[12]इस कारण मैं इन दुःखों को भी उठाता हूँ, पर लजाता नहीं, क्योंकि मैं उसे जिस पर मैं ने विश्वास किया है, जानता हूँ; और मुझे निश्चय है कि वह मेरी धरोहर की उस दिन तक रखवाली कर सकता है। [13]जो खरी बातें तू ने मुझ से सुनी हैं उनको उस विश्वास और प्रेम के साथ, जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख। [14]और पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है, इस अच्छी धरोहर की रखवाली कर।

आयत 12. यह आयत इस प्रकार प्रारंभ होती है, **इस कारण मैं इन दुःखों को भी उठाता हूँ।** "इस कारण" पौलुस की परमेश्वर के प्रवक्ता के रूप में नियुक्ति की ओर संकेत करता है (1:11)। सुसमाचार प्रचार के कारण ही वह यहूदियों से उलझ गया था और निस्संदेह यही उसकी गिरफ्तारी का कारण हुआ। भूतकाल में उसने बहुत दुःख उठाया था (2 कुरिं. 11:23-27), और अब वह "इस कारण" दुःख "भी" उठा रहा था: कैद में उसके साथ अभद्र व्यवहार, इसके साथ ही अपराधी ठहराए जाने की लज्जा, और मृत्यु की संभावना। मसीह के दुःख उठाने का विश्लेषण करने के लिए जिस शब्द का प्रयोग किया गया है, उसी शब्द का प्रयोग यहाँ "दुःख" (*πάσχω, पास्खो)* उठाने के लिए किया गया है।[60]

दुःख उठाने के बावजूद, प्रेरित कहता है, **मैं लजाता नहीं।** NASB में इस अध्याय में तीन बार उद्धृत "लजाना" में से यहाँ यह दूसरी बार उद्धृत हुआ है। पौलुस ने तीमुथियुस से आग्रह किया कि वह न तो सुसमाचार या उससे "लजाए" (1:8); अब उसने अपने ही निर्देश का अनुकरण किया है। शब्दावली ठीक वैसे ही है जैसे रोमियों 1:16 में पाई जाती है: "मैं सुसमाचार से नहीं लजाता।"

यदि हम पौलुस के दुःख उठाने के रहस्य की सम्मति समझें और उसके बावजूद वह लज्जा रहित रहे, तो उसके लिए हमें बारहवीं आयत के अंतिम भाग को देखना होगा, जो बाइबल में विश्वास की महान अभिव्यक्तियों में से एक है: "क्योंकि मैं उसे जिस पर मैं ने विश्वास किया है, जानता हूँ; और मुझे निश्चय है कि वह मेरी धरोहर की उस दिन तक रखवाली कर सकता है।" पौलुस के वक्तव्य में दृढ़ विश्वास है। उसने यह नहीं कहा, "मैं सोचता हूँ कि परमेश्वर है" या "हो सकता है कि कोई परमेश्वर है।" बल्कि, उसने यह कहा, "क्योंकि मैं उसे जिस पर मैंने विश्वास किया है, *जानता* हूँ" (बल दिया गया है)। यहाँ "जानने" (οἶδα, *ओइडा)* के लिए जिस शब्द का प्रयोग किया गया है वह "'ज्ञान' की परिपूर्णता के विषय में कहता है।"[61] नास्तिक कहता है, "मैं यह विश्वास नहीं करता हूँ कि कोई परमेश्वर है।" अनीश्वरवादी कहता है, "मैं यह भी नहीं जानता कि कोई परमेश्वर है।" पौलुस ने कहा, "मैं *जानता* हूँ।"

पौलुस ने यह नहीं कहा, "*जिस पर* मैं विश्वास करता हूँ उसे मैं जानता हूँ" बल्कि **जिस पर मैंने विश्वास किया है मैं उसे जानता हूँ।** इस अवलोकन का उद्देश्य विश्वास की अवयव को हल्का नहीं करना है। पवित्रशास्त्र में हमें ऐसा ज्ञान प्रदान करता है जो उद्धार की ओर हमारी अगुवाई करता है (3:15)। वे हमें "हर एक भले काम के लिये तत्पर" बनाता है (3:17)। इसलिए उनका अध्ययन करने के लिए हमें हर संभव प्रयास करना चाहिए, उनको सीखना चाहिए, और उचित रूप से प्रयोग करना चाहिए (2:15)। फिर भी, हमारा भरोसा परमेश्वर के वचन पर केंद्रित नहीं है, बल्कि स्वयं परमेश्वर पर हमारा भरोसा है। *ओइडा* एक संबंधसूचक शब्द है। इसका अर्थ है "व्यक्तिगत् रूप से परिचित होना या घनिष्ट संबंध रखना।"[62] पौलुस परमेश्वर के बारे में बौद्धिक ज्ञान के बारे में जोर नहीं दे रहा था, बल्कि स्वयं परमेश्वर के प्रति व्यक्तिगत् ज्ञान के बारे में विशेष जोर दे रहा था। "विश्वास" (πιστεύω, *पिस्टेयूओ)* का आशय "अपने आपको पूर्ण

भरोसे के साथ समर्पित करना" है।[63]

पौलुस ने यह भी कहा, **मुझे निश्चय है कि वह मेरी धरोहर की उस दिन तक रखवाली[64] कर सकता[65] है।** "मुझे निश्चय है" एक निश्चयवाचक शब्द (πείθω, *पैथो)* से उद्धृत है जो यह बताता है कि "पौलुस पूर्णतया निश्चित था।" आयत 5 में इसका अनुवाद "मुझे निश्चय है" किया गया है। इस प्रकार का विश्वास कोई भी हिला नहीं सकता है।

"मेरी धरोहर की रखवाली कर सकता है" तीन यूनानी शब्दों का अनुवाद है (τὴν παραθήκην μου, *टेन पाराथेकेन मू*) जिसका अर्थ "मेरी जमा पूँजी" है जो παραθήκη *(पाराथेके)* शब्द से लिया गया है जो παρά (*पारा*, "साथ") और τίθημι (*टिथेमी*, "रखना") के संयोजन से बना है।[66] यह "किसी सम्पत्ति को किसी के हवाले" करने के लिए संदर्भित है।[67] इसका चित्र यह है कि जब कोई अपने मित्र को किसी वस्तु की देखभाल करने की जिम्मदारी सौंपता है या अपना धन किसी बैंक में जमा करता है जहाँ वह सुरक्षित रहेगा। "उस दिन" वह दिन है जब मसीह अपने लोगों को प्रतिफल देने के लिए वापस लौटेगा (देखें 1 थिस्स. 5:2; 2 थिस्स. 1:10)।[68] पौलुस की आँखें उस दिन पर नहीं टिकीं थीं जिस दिन जल्लाद उसके सिर को धड़ से अलग करता, बल्कि उस दिन पर उसकी आँखें टिकीं थीं जब उसे जीवन का मुकुट मिलेगा (2 तीमु. 4:8)।

पौलुस का "धरोहर" से तात्पर्य क्या था? क्या यह इस विषय पर बात करता है कि पौलुस ने परमेश्वर के पास कुछ जमा कर रखा है या उस धरोहर के बारे में बात करता है जो परमेश्वर ने प्रेरित को सौंपी है? कुछ अनुवादों में इसका अनुवाद इस प्रकार किया गया है जैसे कि पौलुस ने परमेश्वर के हाथों में कुछ रखा है (NASB; KJV; NRSV; NIV)। इसमें पौलुस का जीवन, उसकी आत्मा, उसकी सेवकाई, उसकी सेवा द्वारा मसीह में आए लोग, उसका सब कुछ सम्मिलित हो सकता है। दूसरे अनुवादों में इस पाठ का अनुवाद ऐसा किया गया है जैसे कि परमेश्वर ने उसके हाथों में कुछ सौंपा हो (NEB; NAB; ESV), अर्थात्, सुसमाचार और इसको सुनाने की जिम्मेदारी। जो इस बात से सहमत हैं कि इस आयत का संदर्भ उस बात से है जिसे परमेश्वर ने पौलुस को सौंपा है, का मानना है कि ऐसी भाषा का प्रयोग आयत 14, जहाँ प्रेरित ने तीमुथियुस को निर्देश दिया है, में भी किया गया है। वे इसका सारांश यह निकालते हैं कि आयत 12 के शब्दों का भी यही अर्थ हो सकता है।

यह अधिक सार्थक जान पड़ता है कि परमेश्वर उन बातों की देखभाल करेगा जिसे पौलुस ने उसके हाथों में सौंपा है इसके बजाय कि वह उन बातों की देखभाल करे जिसे उसने पौलुस को सौंपा था। आयत 12 और 14 के बीच एक विरोधाभास देखने को मिलता है। आयत 12 में, पौलुस ने उन बातों के बारे में कहा जो मसीह के आने तक परमेश्वर उनकी रखवाली करेगा जबकि आयत 14 में उसने कहा कि तीमुथियुस को उसकी मृत्यु तक किन-किन बातों की रखवाली करनी है।

यद्यपि, दोनों ही व्याख्या सत्य वक्तव्य हैं, जो संदर्भ से मिलता जुलता है,

और श्रेष्ठ अर्थ बताता है। यह कहीं भी किसी अनुच्छेद का विरोधाभास नहीं करता है। जेम्स बर्टन कॉफमैन ने इसका व्याख्या इस प्रकार किया है, "यह दोनों तरफ से सत्य है और संभवतः स्वयं पौलुस की यह इच्छा थी कि इसे दोनों तरफ से समझा जाए।"[69] संभवतः साधारणतया पौलुस यह कह रहा था कि जो वह था और जो उसके पास है, उसने उसे अपने प्रभु को दे दिया; और उसे इसी बात का भरोसा था कि प्रभु उसकी रखवाली करेगा। इसके बावजूद कि पौलुस के साथ जो कुछ भी घटा, उसने परमेश्वर पर भरोसा रखा कि जो कुछ उसने उसके हाथों में सौंपा है, वह उसकी रखवाली करने में सक्षम है। इसलिए, पौलुस लज्जित नहीं था और अपना सिर गर्व से ऊँचा किए हुए था।

आयत 13. पौलुस ने तीमुथियुस को दिए जाने वाला निर्देश जारी रखा। झूठे शिक्षकों का खतरा वह भूला नहीं था। कलीसिया का आत्मिक संघर्ष दो दर्जे पर थाः बाहरी (नीरो और उसकी सेना) और भीतरी (झूठे शिक्षकों)।

आयतें 13 और 14 में समान्तर विचार धाराएं पाई जाती हैं। आयत 13 इस चुनौती के साथ प्रारंभ होता है: **जो खरी बातें तू ने मुझ से सुनी हैं उनको उस विश्वास और प्रेम के साथ, जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख।** अंग्रेजी शब्द "standard" (आदर्श) जिसका अनुवाद यूनानी शब्द ὑποτύπωσις, *ह्यूपोट्यूपोसिस*, से किया गया है जो दो यूनानी शब्दों ὑπό (*ह्यूपो*, "आधीन") और τύπος (*ट्यूपोस*, "नमूना") के संयोजन से बना है। पहला तीमुथियुस 1:16 में इसके लिए "आदर्श" शब्द प्रयोग किया गया है। आयत 13 की यूनानी पाठ में, *ह्यूपोट्यूपोसिस* वाक्य के आरंभ में लिखा गया है।

कुछ विद्वानों ने देखा कि *ह्यूपोट्यूपोसिस* का अनुवाद "रेखांकन" या "रूपरेखा" भी किया जा सकता है (देखें NEB) और यह निष्कर्ष निकाला कि जो पौलुस ने शिक्षा दी है वह केवल एक सामान्य "रूपरेखा" है जिसको तीमुथियुस स्वतंत्र प्रभार से पूरा कर सकता था। वाल्टर एल. लाइफेल्ड ने *ह्यूपोट्यूपोसिस* की संभावित परिभाषा को सूचीबद्ध किया और फिर कहा कि इस पाठ में, "संभवतः यह एक विस्तृत आदर्श का निष्ठाबद्ध रूप में अनुकरण करने के लिए कहा गया है।"[70] एक शब्दकोष के अनुसार, यह शब्द "'एक नमूना' या 'आदर्श' को दर्शाने के लिए आलंकारिक रूप में प्रयोग किया गया है।"[71] कई अनुवादों में इसके लिए "pattern" ("नमूना") अनुवाद किया गया है (ASV; NKJV; NJB; NLT; ESV; CJB; NIV)। लाइफेल्ड ने जोर देकर कहा, "एक नमूना या आदर्श परिवर्तन नहीं करने देता है . . . चाहे इससे जोड़ें, या घटाएं, या पहले ठहराए गए आदर्श में परिवर्तन करें, इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन करने की अनुमति नहीं है।"[72]

आइए हम इस पूरे वाक्यांश को ध्यान से देखें: "जो खरी बातें तू ने मुझ से सुनी हैं उनको उस विश्वास और प्रेम के साथ, जो मसीह यीशु में है, अपना आदर्श बनाकर रख।" ये "खरी बातें"[73] पौलुस द्वारा प्रेरणा से दी गई है;[74] और बदले में उसने इसे तीमुथियुस को पहुँचा दिया। तीमुथियुस को न केवल विचारों की सामान्य रूपरेखा ही थामे रहना था; उसको *शब्दों* का नमूना भी थामे रहना

था। लेनस्की ने लिखा, "तीमुथियुस को जो बातें पौलुस ने सिखाई थी, केवल उसी को ही थामे नहीं रहना था बल्कि जब वह उन बातों के बारे में बोलता है तो उसको उसी अभिव्यक्ति का रूप भी धारण करना था जो उसने पौलुस से सीखा था।"[75] डेविड लिप्सकॉम्ब की निम्न टिप्पणी पर विचार किया जाना चाहिए:

> पौलुस ने तीमुथियुस को उद्धार की सच्चाई को कुछ विशेष शब्दों में सिखाया है और कहीं ऐसा न हो कि उसका अर्थ विकृत हो जाए तो उसको उन्हें उन्हीं शब्द रूपों में प्रयोग करना चाहिए था जो उसने उससे सुना था। कोई भी अभिषिक्त लेखकों के शब्दों में पवित्रशास्त्र की सच्चाई का विश्लेषण करने में अति सावधानी नहीं बरत सकता है। जब मनुष्य पवित्रशास्त्र के शब्दों को अपने विचारों में अभिव्यक्त नहीं कर सकते हैं, तो आमतौर पर यह इसलिए ऐसा है क्योंकि वे खरी शिक्षा में नहीं बने रहते हैं।[76]

पौलुस ने तीमुथियुस को खरी बातों के आदर्श को "थामे रहने" (ἔχω, *एचो)* के लिए कहा - जिसका अर्थ पकड़ना, चिपकना, थामे रहना इत्यादि है।[77] चाहे सताव कितना भीषण क्यों न हो, चाहे खिल्ली क्यों न उड़ाई जाए, चाहे दबाव अत्यधिक क्यों न हो, तीमुथियुस को नमूना दृढ़ता से थामे रहना था और उसे कभी नहीं जाने देना चाहिए था।

तीमुथियुस को इसे **विश्वास** [πίστις, *पिसटीस*] **और प्रेम** [ἀγάπη, *अगापे]* **के साथ, जो मसीह यीशु में है**, करना चाहिए था। संभवतः इन शब्दों का उद्देश्य उसे उसके विश्वास के बारे में स्मरण दिलाना था जो यीशु और उस प्रेम पर जो यीशु से आता है पर केंद्रित था। यह उसके लिए ऐसे संकेत भी थे जो उसे यह बताते कि उसे कैसा आचरण करना चाहिए। उसका खरी बातों की शिक्षा देना और प्रचार करना, विश्वास और प्रेम से चरितार्थ होना चाहिए था। हम कैसे बात करते हैं वे उतना ही महत्वपूर्ण हैं जितनी हमारी बातें होती हैं। हमें "प्रेम में सच्चाई" से बातें करना चाहिए (इफि. 4:15)।

आयत 14. आगे, पौलुस ने कहा, **पवित्र आत्मा के द्वारा जो हम में बसा हुआ है, इस अच्छी धरोहर की रखवाली कर।** "रखवाली करना" (φυλάσσω, *फुलास्सो*) "थामे रहना" से अधिक मजबूत शब्द है (1:13) और "सावधानी पूर्वक नियमों का ध्यान रखते हुए सुरक्षा प्रदान करने" की विचारों की अभिव्यक्ति प्रस्तुत करता है।[78] तीमुथियुस को जो धरोहर सौंपी गई थी, उसकी उसको रखवाली करनी थी। "जो धरोहर तुझे सौंपी गई है" यूनानी शब्दों (τὴν καλὴν παραθήκην, *टेन कालेन पाराथेकेन)* का अनुवाद है, जिसका अर्थ "अच्छी धरोहर" है (देखें ESV)। "अच्छी" καλός *(कालोस)* से उद्धृत है, जिसमें "सराहनीय" और "सर्वोत्तम" जैसी बातें सम्मिलित हैं।[79] "धरोहर" आयत 12 में पाए जाने वाले शब्द से उद्धृत है: παραθήκη *(पाराथेके)*, बहुमूल्य पदार्थ जो दूसरे की जिम्मेदारी में सौंपा गया हो, की ओर संकेत करता है। "सर्वोत्तम एवं सराहनीय धरोहर" का विचार प्रस्तुत करने के लिए NASB में "treasure" जैसे शब्द का प्रयोग किया गया है। "धरोहर" (1:14) को "खरी बातों" (1:13) की

विनिमेयता के अनुसार प्रयोग किया गया है। चाहे कुछ भी क्यों न हो जाए, तीमुथियुस को सुसमाचार के धरोहर की रखवाली करनी थी। विलियम हेन्ड्रिक्सन ने कहा, "उसे हर एक आक्रमण से उसकी रखवाली करनी थी और किसी भी रूप में थोड़ा भी परिवर्तन करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए थी।"[80] जॉन आर. डब्ल्यु. स्टॉट ने लिखा,

> . . . प्रामाणिक सुसमाचार कभी भी बहुप्रचलित नहीं था। यह पापी को नम्र बनाता है।
>
> और जब हमें सुसमाचार के खातिर दुःख उठाने के लिए बुलाया जाता है, तो इसको कम आंकना, उन अनुच्छेदों को हटाने का प्रयास करना जो हमें दोषी ठहराते हैं और विरोध खड़ा करता है, आधुनिक संवेदनशील कानों को कर्कश ध्वनि सुनने से बहरा करता है, की परीक्षा में गिरने की संभावना रहती है।[81]
>
> लेकिन हमें परीक्षा का सामना करना चाहिए। क्योंकि, इससे बढ़कर, हमको सुसमाचार की रखवाली करने के लिए बुलाया गया है, चाहे इसके लिए कुछ भी कीमत क्यों न चुकाना पड़े, हमें इसे मिलावट रहित रखना होगा और हर प्रकार की भ्रष्टता से सुरक्षित रखना होगा।
>
> विश्वासयोग्यता से इसकी रखवाली करें। तत्परतापूर्वक इसका प्रसार करें। बहादूरी से इसके लिए दुःख उठाएं। यही हमारी त्रिपक्षीय जिम्मेदारी है . . . जैसे इस अध्याय में इसका विश्लेषण किया गया है।[82]

इस चुनौती का सामना करना इतना आसान कार्य नहीं है, और यह तीमुथियुस के दिनों में और भी अधिक कठिन था। इसलिए पौलुस ने कहा युवा प्रचारक को इसे अपने आप नहीं करना है। उसको इस धरोहर की रखवाली "पवित्र आत्मा के द्वारा जो हमारे अंदर वास करता है" के द्वारा करनी चाहिए थी। "वास करना" (ἐνοικέω, *एनोइकेओ)* यह सुझाव प्रस्तुत करता है कि आत्मा कभी-कबार आने वाला आगंतुक नहीं है, बल्कि वह अपना वास मसीहियों में बनाता है।[83] उसे पवित्र आत्मा में जीना कहा गया है।[84]

पौलुस के लेखों में पवित्र आत्मा का वास विषय बार-बार दोहराया गया है।[85] इस विषय पर सबसे स्पष्ट अनुच्छेद 1 कुरिंथियों 6:19, 20 हो सकता है: "क्या तुम नहीं जानते, कि तुम्हारी देह पवित्रात्मा का मन्दिर है; जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है, और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।"

"वह . . . मेरी जंजीरों से लज्ज़ित न हुआ . . ." (1:15-18)

[15]तू जानता है, कि आसिया वाले सब मुझ से फिर गए हैं, जिन में फूगिलुस और हिरमुगिनेस हैं। [16]उनेसिफुरुस के घराने पर प्रभु दया करे, क्योंकि उस ने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया, और मेरी जंजीरों से लज्ज़ित न हुआ। [17]पर जब वह रोमा में आया, तो बड़े यत्न से ढूंढ कर मुझ से भेंट की - [18]प्रभु करे, कि

उस दिन उस पर प्रभु की दया हो और जो जो सेवा उस ने इफिसुस में की है उन्हें भी तू भली भांति जानता है।

जब पौलुस तीमुथियुस को लज्जित न होने के लिए उत्साहित कर रहा था, तो इसके लिए उसने दो उदाहरण प्रस्तुत किए। एक नकारात्मक (1:15) और दूसरा सकारात्मक (1:16-18)।

आयत 15. पहले पौलुस ने कुछ लोगों के नकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत किए जो उससे और सुसमाचार से लजाते थेः **तू जानता है, कि आसिया वाले सब मुझ से फिर गए[86] हैं, जिन में फूगिलुस और हिरमुगिनेस हैं।** यह आयत कई प्रश्न खड़े करती है। उदाहरण के लिए, जब पौलुस ने कहा कि "सब मुझसे फिर गए हैं" तो वह किसके कह रहा था? कुछ लोगों की मान्यता है कि ये आसिया के मसीही थे जो रोम में रहते थे, लेकिन वाक्यांश "आसिया *में* [ἐν, *एन*]" यह बताता है कि वे उस समय रोमी साम्रज्य के आसिया में रहते थे।

"सब" (πᾶς, *पास)* दुविधा में डालने वाला शब्द है। स्पष्टतया यह शब्द आसिया के सभी लोगों, विश्वासी और अविश्वासियों को संबोधित नहीं कर रहा था। यह आसिया के हर एक मसीहियों को भी संबोधित नहीं कर रहा था, क्योंकि आसिया की राजधानी इफिसुस में तीमुथियुस और उनेसिफुरुस (1:16-18; 4:19) का भी घराना था। इसके साथ ही, इस बात की पुष्टि नहीं होती है कि इफिसुस की सारी कलीसिया ने पौलुस को पीठ दिखा दी थी। कई अनेक आयतों की भाँति, "एक बहुत बड़ी संख्या निर्दिष्ट करने के लिए" (देखें मत्ती 2:3; 4:24),[87] स्पष्ट रूप से यहाँ "सब" शब्द प्रयोग किया गया है। हम इस भाषा को इस प्रकार भी समझ सकते हैं: "वे सब जो आसिया में हैं [विशेष रूप से जिनसे मैंने साथ देने की अपेक्षा की थी] मुझसे फिर गए हैं।"

क्या और कब और कहाँ से संबंधित अन्य प्रश्न भी उठते हैं। *किस बात में ये लोग पौलुस से फिर गए थे?* यह कब और कहाँ यह हुआ? चूँकि तीमुथियुस इस से अवगत् थे तो संभवतः उनको पौलुस से फिरना आसिया में ही हुआ होगा। हो सकता है कि जब पौलुस आसिया में ही था जब उसको बन्दी बना लिया गया था, और हो सकता है कि जो लोग उसके साथ थे वे उसी तरह भाग खड़े हुए होंगे जिस तरह यीशु के शिष्य उसके बन्दी बनाए जाने के समय भाग खड़े हुए थे (मरकुस 14:50)। पौलुस के मन में दूसरा विकल्प उसकी प्राथमिक सुनावाई के समय की बात हो सकती है "जब सब उससे फिर गए" होंगे (2 तीमु. 4:16)।

कुछ टीकाकार यह आंकलन लगाते हैं कि आसिया में पौलुस के कुछ प्रभावशाली मित्र थे जिनसे वह यह अपेक्षा करता था कि वे आकर उसकी ओर से गवाही देंगे, लेकिन उन्होंने उसे छोड़ दिया। इफिसुस में उसके मित्रों में से आसिया के अधिकारी जिन्हें "हाकिम" कहा जाता था, सम्मिलित थे (प्रेरितों. 19:31)।[88] पौलुस के मन में, एक दोषी ठहराए हुए अपराधी की ओर से गवाही देने के लिए जो भी रहे होंगे वे राजनैतिक आत्मघाती होंगे - और इससे संभवतः भौतिक नुकसान भी पहुँच सकता था - इसलिए उन्होंने सोचा होगा कि वे ऐसा

नहीं करेंगे।

इस समूह में से पौलुस ने दो व्यक्तियों के नाम लिएः फूगिलुस और हिरमुगिनेस। जो कुछ उनके बारे में यहाँ कहा गया है इसके अलावा और कुछ हम नहीं जानते हैं। संभवतः पौलुस ने इन दो मित्रों के बारे में सोचा होगा कि वे कभी भी उसे नहीं छोड़ेंगे, चाहे उन्हें उसके लिए कितनी भी हानि उठानी न पड़े। किसी भी मूल्य पर, यह बड़ा दुर्भाग्य है कि पवित्रशास्त्र में हमें उनके बारे में केवल नकारात्मक रूप ही देखने को मिलता है, जब उन्होंने पौलुस का साथ छोड़ दिया था।

हमारे लिए, इस श्रृंखला में कई उत्तर रहित प्रश्न हैं। चूँकि तीमुथियुस, जो कुछ घटित हुआ था उसके बारे में अवगत् थे, इसलिए पौलुस को इसके विषय में किसी प्रकार का विश्लेषण देने की आवश्यकता नहीं थी। एक तथ्य स्पष्ट दीख पड़ता है। पौलुस इसको एक उदाहरण के रूप में, तीमुथियुस के लिए एक स्पष्ट संदेश देकर कि उसे उनके समान नहीं होना है, प्रस्तुत कर रहा था कि कुछ लोग कैसे लजाते थे।

आयतें 16-18. इसके विपरीत कि जो उससे फिर गए हैं, पौलुस ने एक व्यक्ति के बारे में लिखा है जो लज्जित नहीं हुआ थाः

> **उनेसिफुरुस के घराने पर प्रभु दया करे, क्योंकि उस ने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया, और मेरी जंजीरों से लज्ज़ित न हुआ। पर जब वह रोम में आया, तो बड़े यत्न से ढूंढ कर मुझ से भेंट की - प्रभु करे, कि उस दिन उस पर प्रभु की दया हो - और जो जो सेवा उस ने इफिसुस में की है उन्हें भी तू भली भांति जानता है।**

"उनेसिफुरुस" का अर्थ "लाभ लाने वाला" है।[89] पौलुस के साथ उसका संबंध देखा जाए तो उसके नाम का उचित अर्थ है। इफिसुस में उसने पौलुस को सहायता देना आरंभ कर किया थाः "जो जो सेवा उस ने इफिसुस में की है उन्हें भी तू भली भांति जानता है" (1:18)।[90] हो सकता है कि वह इफिसुस में पौलुस के तीन वर्ष की सेवकाई का एक साथी रहा हो (प्रेरितों.19; 20), परंतु संभवतः वहाँ उसकी सेवकाई पौलुस के हालिया व संक्षिप्त समय के लिए रही होगी (1 तीमु. 1:3; 3:14)।

पौलुस के बन्दी बनाए जाने के बाद, उनेसिफुरुस पौलुस से "नहीं फिरा" बल्कि इसके विपरीत वह उसकी ओर फिर गया था। पौलुस ने जोर देकर कहा कि "वह . . . मेरी जंजीरों से लज्ज़ित न हुआ।" जब हम पौलुस का "मेरी जंजीरों" के बारे में पढ़ते हैं, तो संभवतः इसकी कल्पना कर सकते हैं कि वह अपनी बांहों को हिलाता था, जिससे जंजीरों की झनकार सुनाई पड़ सकती थी। हो सकता है कि रोम में यह उसकी पहली बंधुआई थी और उसको एक सिपाही के साथ जंजीरों से जकड़ा गया था (देखें प्रेरितों.28:16, 20)। इसकी भी संभावना जताई जाती है कि वह एक लंबी जंजीर से जड़ा गया था जो एक दीवार से बंधा था। यूनानी पाठ में जंजीर (ἅλυσίν, *हालूसीन)* के लिए एकवचन यूनानी शब्द

प्रयोग किया गया है।

उनेसिफुरुस ने रोम में पौलुस की सहायता करने के लिए एक लंबी, थका देने वाली यात्रा तय की थी। (संभवतः वह पौलुस की ओर से गवाही देना चाहता था, यद्यपि ऐसा करना अति खतरनाक था।) इस विशाल नगर में पहुँचकर पौलुस को ढूँढना इतना आसान नहीं था। नगर का अधिकांश भाग अग्नि से नष्ट हो चुका था, और रोम की गलियाँ भूलभुलैया के समान थी। इसके साथ ही, वहाँ मसीहियों को ढूँढना भी आसान नहीं था जिनसे वह पौलुस का पता पूछ सके। निस्संदेह वे अज़नबियों से चौकस रहते थे; जब कोई भी उनसे प्रेरित के बारे में पूछ ताछ करते थे तो इसकी अधिक संभावना थी कि वे यह कहते हों, "मुझे नहीं पता कि आप क्या कह रहे हैं," इसके बजाय कि वे प्रेरित तक पहुँचने का सीधा रास्ता बताएं। इसके साथ ही, वहाँ कई बन्दीगृह और बन्दी थे, और जो बन्दीगृह के प्रभारी थे किसी तरह से सहायता करने के लिए तैयार नहीं होते थे।

ऐसा लगता है कि पौलुस को ढूँढना एक असंभव सा कार्य था, परंतु उनेसिफुरुस उसे ढूँढने में लगा रहा। पौलुस ने कहा, "जब वह रोम में आया, तो बड़े यत्न से ढूंढ कर मुझ से भेंट की" (1:17)। "यत्न से" (σπουδαίως, *स्पूडाइओस)* का अर्थ "परिश्रम से," "उत्सुकता से" है।[91] फिलिप्स अनुवाद इसका विश्लेषण इस प्रकार करता है "मुझे ढूँढने में उसने बड़ा कष्ट उठाया।" पी. एन. हैरीसन ने उनेसिफुरुस की इस तलाश को इन शब्दों में चित्रित किया है:

> भीड़ के बहाव में एक लक्षय भेदी आमुख झलकती है, भूमध्य सागरीय तट पर एक अज़नबी अपनी तीव्र लक्षय पाने का अनुकरण करता हुआ, अनज़ान नगर की गलियों को छान रहा था, द्वारों को खटखटाता, हर एक सुराग का पीछा करता, जो ज़ोखिम वह उठा रहा था, उसकी उसको चेतावनी मिलती लेकिन अपनी जिज्ञासा से मुँह नहीं फेरता; जब तक कि किसी अनजान कैद खाने से कोई जानी पहचानी आवाज़ उसका स्वागत् न करती, और फिर उसने रोमियों के जंजीरों से जकड़े पौलुस को ढूँढ निकाला।[92]

जब उनेसिफुरुस ने उसे ढूँढ निकाला, तब पौलुस ने कहा, "उस ने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया।"[93] इस जी को ठंडा करने की उक्ति में भोजन एवं जीवन की अन्य आवश्यकताएं सम्मिलित है। नियमानुसार, बन्दियों से आगंतुक मिल सकते थे (मत्ती 25:36, 43; प्रेरितों. 28:30)। बल्कि, बन्दी, मित्र एवं परिवार के सदस्यों पर निर्भर रहते थे (प्रेरितों. 24:23; इब्रा. 10:34; 13:3)। घर में बन्दी बनाए जाने के दौरान पौलुस को स्वतंत्रता नहीं थी, लेकिन लोग अभी भी उससे मिल सकते थे (लूका उसके साथ था) और उसको आवश्यक वस्तुएं देते थे (2 तीमु. 4:11, 13)।

उनेसिफुरुस द्वारा लाया गया सबसे महत्वपूर्ण जी को ठंडा करने वाला उपहार पौलुस का मन और प्राण था। शब्द "जी को ठंडा करना" (ἀναψύχω, *अनाप्सूखो)* शब्द समूह का शाब्दिक अर्थ "ठंडा करना" है।[94] उनेसिफुरुस का आगमन् "ताजी हवा" का श्वास (AB), ग्रीष्मकाल में बासी वस्तुओं से बहने वाली

ठंडी हवा, पौलुस के भूमिगत् दमघोंटू बंदीगृह में ठंडी हवा के झोंके के जैसा था।

सोलहवीं आयत में, पौलुस ने "मन की इच्छा" कही जाने वाली अभिव्यक्ति को अभिव्यक्त किया है[95]: "उनेसिफुरुस के घराने ['household'; NIV] पर प्रभु दया करे, क्योंकि उस ने बहुत बार मेरे जी को ठंडा किया।" इस पत्री के अंत में इस परिवार के बारे में फिर से वर्णन किया गया है (4:19)।

संभवतः कुछ यह सोचते हैं कि उनेसिफुरुस के घराने को यहाँ क्यों सम्मिलित किया गया है। हो सकता है कि जब पौलुस इफिसुस में था तो इस परिवार ने उसकी "सेवा" की थी। इसके साथ ही उनेसिफुरुस के रोम यात्रा ने उसके परिवार में एक बहुत बड़ा बोझ लादा होगा। वह बन्दी बनाया जा सकता था या फिर मार डाला जा सकता था, वह परिवार को बिना पति, पिता, और परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला छोड़ सकता था। इस परिवार ने पौलुस के लिए जो त्याग किया था, उसकी उसने सराहना की है।

अट्ठारहवीं आयत में अपनी "शुभकानाओं की प्रार्थना" में उसने स्वयं उनेसिफुरुस को सम्मिलित किया है: "प्रभु करे, कि उस दिन उस पर प्रभु[96] की दया हो।" "उस दिन" का संदर्भ न्याय के दिन से है (देखें 1:12)। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि यहाँ और 4:19 में प्रयोग की गई भाषा यह बताती है कि उनेसिफुरुस, संभवतः रोमियों के हाथों मारा जा चुका है। यह संभावना है, लेकिन कई अन्य संभावनाएं भी हैं। हो सकता है कि वह भी बन्दी बना लिया गया हो और इसके पश्चात् वह पौलुस के जी को "ठंडा" न कर पा रहा हो। हो सकता है कि वह रोम छोड़कर अपने घर इफिसुस की ओर लौट रहा हो। एच. सी. जी. मूल ने इस प्रकार लिखा है कि "इस में अनुमान लगाने की कोई आवश्यकता नहीं है कि उनेसिफुरुस मर चुका है। यात्रा के कारण परिवार से अलग होना इस अनुच्छेद की भाषा के अनुकूल है।"[97] यदि उनेसिफुरुस अपने विश्वास के कारण मारा गया होता, तो यह बड़ा अनुचित होता कि पौलुस ने इस भाई को श्रद्धांजलि नहीं दी।

इससे पहले कि हम पौलुस की "शुभकानाओं की प्रार्थना" छोड़कर आगे बढ़ें, तो कुछ लोग अट्ठारहवीं आयत को मरे हुओं के लिए प्रार्थना का आधार मानकर वकालत करते हुए दिखाई देते हैं। गथरी ने लिखा कि "केवल इस अंदेश पर कि उनेसिफुरुस मर चुका था, के आधार पर यह सिद्धांत प्रतिपादित करना संदिग्ध जान पड़ता है जिसका नये नियम में कोई समर्थन नहीं पाया जाता है।"[98] विक्टर आर. गॉर्डन का सारांश इससे भी अधिक मजबूत जान पड़ता है: "अलग थलग पड़े इस अनुच्छेद के आधार पर मृतकों के लिए प्रार्थना करने का सिद्धांत नहीं स्थापित किया जा सकता है, और न ही ऐसा करने के लिए पवित्रशास्त्र इसका समर्थन करता है।"[99]

हम 16 से 18 आयतों में पाए जाने वाले सभी प्रश्नों का उत्तर नहीं दे सकते हैं; लेकिन, पौलुस का उद्देश्य स्पष्ट है। वह तीमुथियुस से कह रहा था, "उनेसिफुरुस के जैसा बनो। वह न तो मुझसे और न ही सुसमाचार से लजाता था!" गेरी डब्ल्यु. डेमारेस्ट के अनुसार, "सबको उनेसिफुरुस की आवश्यकता है!

जो मित्र आपका साथ देता है वह कुछ भी क्यों न हो जाए आपके साथ ही रहेगा। वह मित्र आपका साथ देने के लिए अपनी जान भी जोख़िम में डालता है।"[100] पौलुस इसमें यह भी जोड़ता, "और हर एक को एक उनेसिफुरुस बनने की आवश्यकता है।"

अनुप्रयोग

क्या हम मशाल आगे बढ़ा रहे हैं? (1:3-8)

तीमुथियुस को उत्साहित करने के लिए पौलुस ने जिन औजारों का प्रयोग किया था वे आज भी हमको उत्साहित करे। हम में से बहुत से लोगों के पास संभवतः ऐसे कई *यादगार* हैं जो हमें आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करते हैं - हो सकता है कि ये यादगार हमारे शिक्षकों या जिन्होंने हमारा पालन-पोषण किया है, से जुड़े हों। हम में से अधिकांश लोगों के पास विश्वासयोग्यता का *आदर्श* होगा - जो विरोध और सताव के बावजूद विश्वासयोग्य बने रहे। इसके साथ ही, हमको अपने ईश्वरीय सिद्धांत के प्रति सजग रहना है जो हमसे यह आग्रह करता है कि हमको सुसमाचार से नहीं लजाना है।

पवित्र आत्मा ने मशाल पौलुस को पहुँचा दी, और पौलुस ने इसे तीमुथियुस को दी; तीमुथियुस को इसे विश्वासयोग्य लोगों को पहुँचाना था, और विश्वासयोग्य लोगों को इसे अन्य लोगों को पहुँचाना था (2:2)। यह प्रक्रिया जारी रही जिसके कारण सुसमाचार हम तक पहुँचा। दो प्रश्नों को अनदेखा नहीं किया जा सकता है: (1) क्या आज हम सत्य की मशाल को विश्वासयोग्यता के साथ आगे बढ़ा रहे हैं? (2) क्या हम इसे दूसरों तक पहुँचा रहे हैं?

"विश्वास की छाप" (1:5)

मुझे मेरे माता-पिता, डेव एच. और लिलियन रोपर द्वारा छोड़े गए "विश्वास की छाप" स्मरण आती है। धर्मविज्ञानी कार्ल बार्थ से एक बार पूछा गया कि वह क्यों विश्वास करता है। उसने उत्तर दिया, "क्योंकि मेरी माँ ने मुझे बताया था।"[101] मेरा विश्वास मेरे माता-पिता के विश्वास के साथ ही आरंभ हुआ। इन वर्षों में, इस विश्वास को चुनौती दी गई; लेकिन मैंने कभी नहीं सुना या पढ़ा या इतना अनुभव किया जो मुझे इस विश्वास को त्यागने के लिए विवश करे। मेरे माता-पिता के विश्वास की छाप अभी भी बनी हुई है।

माता-पिताओं के लिए इससे बड़ी कोई चुनौती नहीं है कि वे अपने बच्चों में इस विश्वास को बनाए रखे, कि वे "प्रभु की शिक्षा और चेतावनी देते हुए उनका पालन-पोषण करें" (इफि. 6:4; देखें नीति. 22:6)। इस प्रक्रिया में दादा-दादी, नाना-नानी भी शामिल किए जाने चाहिए। हमें तीमुथियुस की नानी लुइस के योगदान को अनदेखा नहीं करना चाहिए (देखें नीति. 17:6)। कैसे माता-पिता और दादा-दादी या नाना-नानी अपने बच्चों के साथ विश्वास बांट सकते हैं? वे

अपने बच्चों और नाती-पोतों के लिए बाइबल पढ़ सकते हैं और उन्हें बाइबल की कहानियां बता सकते हैं। वे जवानों को स्वयं बाइबल पढ़ने और आयतें कंठस्थ करने के लिए उत्साहित कर सकते हैं। उन्हें यह सुनिश्चित करना होगा कि बच्चे बाइबल अध्ययन में निरंतर भाग ले रहे हैं और उन्हें उनसे यह कहना होगा कि वे उन सभी मसीही गतिविधियों में भाग लें जो उनके लिए आयोजित की जाती हैं। जो दादा-दादी या नाना-नानी अपने नाती-पोतों के पास नहीं रहते हैं उनके साथ संवाद करने के लिए उन्हें उनको पत्र लिखना चाहिए। ऐसा करके, माता-पिता और दादा-दादी या नाना-नानी को अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करना नहीं भूलना चाहिए। जो लोग बच्चों को शिक्षा देते हैं उनमें वे आदर्श विश्वास देखना चाहते हैं।

कुछ स्त्रियों को यह स्वयं करना होगा, जैसे तीमुथियुस की माता व नानी ने किया था। यह कभी भी आसान कार्य नहीं रहा है, लेकिन यूनीके और लुइस के उदाहरण से यह प्रमाणित हो गया था कि ऐसा किया जा सकता है।

"लज्जित न हो" (1:8-18)

पौलुस ने तीमुथियुस को लज्जित न होने के लिए कहा (1:8-11), उसने इस बात पर जोर दिया कि वह लजाता नहीं था (1:12-14), और उसने कहा कि उनेसिफुरुस भी नहीं लजाता था (1:15-18)। हम अपने आपको कुछ प्रश्न पूछते हुए नहीं चूक सकते हैं: "क्या मैं कभी भी मसीह के कारण लजाता था?"; "क्या मैं संसार के द्वारा कभी ऐसे किनारे कर दिया गया था कि मैं मसीह के अनुयायी के समान आचरण करने से चूक गया था?" जब हम सोचते हैं कि कोई यह न जाने कि हम मसीही है, जब हम उचित क्या है उसके बारे में बोलने से चूक जाते हैं, जब हम परमेश्वर के साथ अपने संबंध के बारे में शांत रहते हैं, जब हम अपने चारों ओर के समाज के आचरण में घुलमिल जाते हैं और जब हम अपने समाज में अन्य जाति की संस्कृति के मूल्यों को स्वीकार करते हैं, तो हम ऐसा दर्शाते हैं मानो हम मसीह से लजाते हैं।[102]

दूसरे तीमुथियुस की पृष्ठभूमि में, कुछ लोग सुसमाचार से लजाते थे क्योंकि यदि वे मसीही होना स्वीकार करते थे उनको सताया जाता था, जिसमें बन्दीगृह में डाला जाना व भयानक मृत्यु भी हो सकता था। आज भी कुछ मसीही लोग इसी प्रकार की परिस्थितियों का सामना करते हैं, अधिकांश मसीही लोग भारी दबाव, भले ही वे जानलेवा न हो लेकिन जो वास्तविक हैं, का सामना करते हैं। उनका परिवार उनको त्याग देता है। उनके "मित्र" उनको छोड़ सकते हैं। लोग उनको डांट सकते हैं या उनके बारे में बुरी बातें कह सकते हैं। एक मसीही व्यापारी को लोग छोड़ सकते हैं। वह ग्राहक खो सकता है, यहाँ तक कि उसका व्यवसाय बंद हो सकता है।

पौलुस हमसे, जैसा उसने तीमुथियुस से कहा था, कहेगा: "खरी बातों को आदर्श बनाकर रख . . . पवित्र आत्मा के द्वारा . . . जो धरोहर तुझे सौंपा गया है, रखवाली कर" (1:13, 14); "लज्जित न हो" (1:8)। चाहे कुछ भी क्यों हो जाए, हमें निर्णय लेना होगा कि हम कहाँ खड़े हैं और वहीं हमको डटे रहना

होगा। यीशु ने घोषणा की, "जो कोई इस व्यभिचारी और पापी जाति के बीच मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा, मनुष्य का पुत्र भी जब वह पवित्र दूतों के साथ अपने पिता की महिमा सहित आएगा, तब उस से भी लजाएगा" (मरकुस 8:38)।

सुसमाचार के लिए दुःख उठाना (1:8)

आज हम सुसमाचार के लिए दुःख उठाने के बारे में अधिक बातें नहीं करते हैं। हम मसीहियत के सकारात्मक दृष्टिकोण पर अधिक जोर देते हैं: यह हमारे जीवन को कैसे आशीषित करता है, हमें प्रसन्न रखता है, हमारे विवाहित जीवन और घर को सुधारता है, इत्यादि इत्यादि। हम ऐसा तर्क करते हैं कि यदि हम दुःख उठाने के बारे में बात करते हैं तो यह लोगों को दूर ले जाएगा। यद्यपि, यीशु ने उसके लिए बेहिचक दुःख उठाने के बारे में कहा: "धन्य हो तुम, जब मनुष्य मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, और सताएँ और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरोध में सब प्रकार की बुरी बात कहें" (मत्ती 5:11)। पौलुस ने भी इसके बारे में बेहिचक कहा: "पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएँगे" (2 तीमुथियुस 3:12)। मुझे गलत न समझें। मैं मसीहियत के सकारात्मक लाभ के बारे में प्रचार करना पसंद करता हूँ। इसके साथ ही, मैं दुःख का आनंद नहीं उठाना चाहता हूँ और इसके बारे में छानबीन भी नहीं करता हूँ। फिर भी, जब लोग हमारे विषय में गलत बात बोलते हैं, जब हमारे मित्र हमें छोड़ जाते हैं या जब परिवार के सदस्य हमें त्याग देते हैं, तो हम सबको मानसिक व आत्मिक रूप से इस बात के लिए तैयार रहना होगा।

"जो धरोहर मैंने उसको सौंपा है" (1:12)

आयत 12 आज हमारे लिए बड़ी सान्तवना का स्रोत होना चाहिए। हम एक क्लेशदायी संसार में रहते हैं। जो भी हम हैं और जो कुछ हमारे पास है, क्षणभर में समाप्त हो सकता है। किसी ने हमारी तुलना एक ऐसे व्यक्ति से की जिसकी जेब सोने और बहुमूल्य रत्नों से भरी हो और एक ऐसे मार्ग से यात्रा कर रहा था जहाँ चोर और जेब कतरे भरे हुए थे।[103] ऐसे समय हम तभी सुरक्षित अनुभव कर सकते हैं जब हमने अपना धन अपने से अधिक सामर्थशाली व्यक्ति के हाथ में सौंपा हो। परमेश्वर के हाथों में हमारा धन सुरक्षित है। परमेश्वर के हाथों में *हम* सुरक्षित हैं।

एक बूढ़ी स्त्री के बारे में कहा जाता है कि उन्हें बाइबल बहुत पसंद थी और उन्होंने कई ढेर सारी आयतें भी कंठस्थ की थीं। जब समय बीतता गया, उनकी स्मरण शक्ति भी क्षीण होती चली गई; और एक-एक करके, बहुमूल्य वचन उनके स्मरण शक्ति से समाप्त होती चली गई। अंततः, अब उनको केवल एक ही अनुच्छेद स्मरण था, जिसे वह बार-बार दोहराती थीः "क्योंकि मैं उसे जिस पर मैं ने विश्वास किया है, जानता हूँ; और मुझे निश्चय है कि वह मेरी धरोहर की

उस दिन तक रखवाली कर सकता है।" यद्यपि सब कुछ धुमिल होता जा रहा था, जब तक कि "मेरी धरोहर की वह उस दिन तक रखवाली कर सकता था।" अंततः, जब वह अपने जीवन के अंतिम क्षणों पर पहुँची, उनके परिवारवालों ने देखा कि उनके होंठ हिल रहे थे। यह सोचकर कि वह अपनी अंतिम इच्छा प्रकट कर रही थी, परिवार का एक सदस्य उसकी ओर झुककर उन्हें सुनने लगा। वह बार-बार यह बड़बड़ा रही थी, "वह, वह, वह।" इस महान अनुच्छेद का यही एक मात्र शब्द उनको स्मरण था, लेकिन यह पर्याप्त था। उसने अपने आपको उसे दे दिया था, और वह जानती थी कि वह सुरक्षित थी।[104]

पवित्र आत्मा का वास (1:14)

जब हम बपतिस्मा लेते हैं तो आत्मा हमारे अंदर वास करता है। उस समय, परमेश्वर हमें "प्रतिज्ञा" के रूप में या हमारे स्वर्गीय घर का "प्राथमिक भुगतान" (इफिसियों 1:13, 14) के रूप में "पवित्र आत्मा का दान" देता है (प्रेरितों. 2:38; देखें 5:32)। हमें कुछ बातों के बारे सचेत होना है जो पवित्र आत्मा हमारे लिए *नहीं* करता है। वह हमें सूचना नहीं देता है। यह तो उसने पहले ही प्रेरितों के साथ किया है (यूहन्ना 16:12-15), और इसका प्रकाशन नये नियम के पृष्ठों में सुरक्षित है। वह अपने आपको भावनाओं के द्वारा प्रकट नहीं करता है। हम पवित्र आत्मा को ठीक उसी तरह हमारे अंदर जानते हैं जिस तरह हम यह जानते हैं कि हमारे अंदर अविनाशी आत्मा है: बाइबल हमें बताती है कि यही मामला है। वह आश्चर्यकर्म करने की क्षमता नहीं प्रदान करता है। प्रथम सदी के कुछ चुने लोगों ने ही वचन को सत्यापित करने के लिए आश्चर्यकर्म किए (इब्रा. 2:3, 4), लेकिन वे दिन अब बीत चुके हैं (देखें 1 कुरिं. 13:8)।

हमारे अंदर वास करने वाला आत्मा हमारे लिए क्या करता है? वह हमारी सहायता करता है। रोमियों 8:13, 26 में पौलुस ने लिखा कि आत्मा हमारी कमजोरियों में हमारी सहायता करता है, शरीर की अभिलाषाओं को पूरा न करने में सहायता करता है, और प्रार्थना करने में हमारी सहायता करता है। इफिसियों 3:16 कहता है कि हम "उसके आत्मा से अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते" जाते हैं। पवित्र आत्मा के कई और भी कार्य हैं जिसके बारे में हम नहीं जानते हैं; उसके बारे में जान भी नहीं सकते हैं; लेकिन हमें विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से इन बातों को समझना है कि वह हमारे अंदर वास करता है और हमारी सहायता करता है। तीमुथियुस को यह आश्वासन था कि वह सुसमाचार रूपी धरोहर की रखवाली कर सकता है क्योंकि उसको पवित्र आत्मा की सहायता प्राप्त थी!

समाप्ति नोट्स

[1]ल्यूक टिमोथी जॉनसन, *1 टिमोथी, 2 टिमोथी, टाईटस*, नौक्स प्रीचिंग गाईड्स (एटलान्टा: जौन नौक्स प्रैस, 1987), 13. [2]डब्ल्यू. ई. वाइन, मेरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाईट,

जूनियर, *वाईन्स कंप्लीट एक्सपोज़िट्री डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एण्ड न्यू टेस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 403; वॉल्टर बाऊर, *ए ग्रीक-इंगलिश लेक्सिकॉन ऑफ द न्यू टेस्टामेंट एण्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिट्रेचर,* तीसरा एडिशन, रिवाइज्ड एंड एडिटेड फ्रेड्रिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 2000), 654. [3]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 521; बाऊर, 652. [4]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 522; बाऊर, 1039. [5]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 521; बाऊर, 68. [6]बाऊर, 587. [7]विलियम हेन्ड्रिक्सन, *एक्सपोजिशन ऑफ द पास्टोरल एपिस्ल्स,* न्यू टेस्टामेंट कॉमेन्ट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1965), 225, एन. 113. [8]आर. सी. एच. लेंस्की, *द इंटरप्रेटेशन ऑफ सेंट पॉल्स एपिसिल्स टू द कोलोशियंस, टू द थिस्स्लोनियांस, टू टिमोथी, टू टाईटस एण्ड टू फ़िलेमोन* (पृष्ठ नहीं: लूथरन बुक कंसर्न, 1937; रीप्रिंट, कोलंबस, ओहाइओ: वार्टबर्ग प्रैस, 1946), 747. [9]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *गार्ड द गौस्पल: द मेसेज ऑफ 2 टिमोथी,* द बाइबल स्पीक्स टुडे (डाउनर्स ग्रोव, इल्लिनोय: इन्टरवर्सिटी प्रैस, 1973), 28. [10]"प्रार्थनाएं" δέησις *(डीसिस)* के एक बहुवचन रूप का अनुवाद है। इस शब्द को 1 टिमोथी 2:1 में "निवेदन" अनुवाद किया गया है।

[11]अभिव्यक्ति "रात और दिन [लगातार]" का प्रयोग 1 तीमुथियुस 5:5 में भी हुआ है। [12]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 376. [13]बाऊर, 377 (बल दिया गया है)। [14]अवसर के विषय अन्य अनुमान भी लगाए हैं, जिनमें मिलेतुस में अश्रुपूर्ण विदाई भी सम्मिलित है (प्रेरितों 20:37, 38)। [15]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 522. [16]इस पारिभाषिक शब्द का 1 तीमुथियुस 1:5 में अनुवाद इसी प्रकार से हुआ है। [17]बाऊर, 338. [18]प्रत्यक्षतः उसने यूनिके को तीमुथियुस का खतना करवाने देने की अनुमति नहीं दी थी (देखें प्रेरितों 16:3)। [19]बाऊर, 792. [20]डेल हार्टमैन, "ए सिंसियर फेथ," ईस्टसाईड चर्च ऑफ क्राईस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओकलाहोमा में, मई 12, 2013 को प्रचार किया गया एक सन्देश।

[21]इनमें से कुछ 1 तीमुथियुस 4:14 (μετά, *मेटा*) और 2 तीमुथियुस 1:6 (διά, *डिया*) में प्रयुक्त विभिन्न पूर्वसर्गों की ओर ध्यान खींचते हैं। फिर वे इस निषकर्ष पर पहुँचे कि क्योंकि दोनों वरदान भिन्न थे, यह संकेत था कि संभवतः उनमें से एक आश्चर्यकर्म वाला था (संभवतः 2 तीमुथियुस 1 वाला वरदान)। [22]जेम्स मैक्क्राईट, *मैक्क्राईट ऑन द एपिसिल्स,* वन वॉल्यूम एडिशन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, तिथि अज्ञात), 457. [23]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 600. [24]बाऊर, 62. [25]डॉनल्ड गुथ्री, *द पास्टोरल एपिसिल्स,* रिवाइज्ड एडिशन, द टिन्डेल न्यू टेस्टामेंट कॉमेन्ट्रीस (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग को., 1990), 138. [26]होमर ए. केंट, जूनियर, *द पास्टोरल एपिसिल्स* (शिकागो: मूडी प्रैस, 1958), 258. [27]"संयम" के लिए 2 तीमुथियुस 1:7 में प्रयुक्त यूनानी शब्द (σωφρονισμός, *सोफ्रोनिसमॉस)* और "संयम" के लिए गलातियों 5:23 में प्रयुक्त (ἐγκράτεια, *एनक्राटेइया)* भिन्न हैं, परन्तु दोनों में आत्म-संयम का विचार है। [28]यह इसलिए हो सकता है क्योंकि यूनानी लेख में "आत्मा" से पहले कोई निश्चित शब्द वर्ग नहीं है। [29]बाऊर, 215; वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 230. [30]देखें 1 तीमु. 1:12 ("सामर्थ्य"); 6:15 ("अद्वैत अधिपति")।

[31]लेंस्की, 755. [32]*अगापे* 1 तीमुथियुस 1:5 में उल्लेखित प्रेम है। [33]संबंधित शब्द (जिनका अनुवाद "समझदार," "बुद्धिमान," और "समझदारी से" हुआ है) 1 तीमु. और तीतुस में पाए जाते हैं (देखें 1 तीमुथियुस 3:2; तीतुस 1:8; 2:2, 5, 6, 12)। [34]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाईट, 172. [35]लेंस्की, 756. [36]अनुग्रह और कार्य, परमेश्वर की अनंतकाल की योजना, और हमारी पवित्र बुलाहट की सामान्य विषय वस्तु कार्ल स्पैन, *द लेटर्स आफ पॉलटू तीमोथी एण्ड टाइटस,* द लिविंग वर्ड कमेंट्री (आस्टीन, टेक्ससः आर. बी. स्वीट कम्पनी, 1970), 116-18 में पाई जाती है। [37]वाल्टर एल. लाइफेल्ड, *1 & 2 तीमोथी, टाइटस,* द NIV अप्लीकेशन कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन, 1999), 233. [38]दूसरा तीमुथियुस 2:15 में उसी मूल शब्द रूप का एक नकारात्मक शब्द जिसका अनुवाद "जिसे लज्जित होने की आवश्यकता नहीं है" अनुवाद किया गया है। [39]इससे संबंधित शब्द μάρτυς (*मार्टूस*) है जिससे हमें *"मार्टर"* (शहीद) शब्द मिलता है। एक

शहीद अपने विश्वास के लिए प्राण न्योछावर कर इसकी गवाही देता है। [40]रोनाल्ड ए. वार्ड, *कमेंट्री आन 1 एण्ड 2 तीमोथी एण्ड टाइटस* (वाको, टेक्ससः वर्ड बुक्स, 1974), 149.

[41]लेन्सकी, 757. [42]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाइट, 17, 291. [43]*एक्ट्स आफ तीमोथी।* [44]गेरी डब्ल्यु. डेमारेस्ट, *1, 2 थिस्सलोनियंस, 1, 2 तीमोथी, टाइटस,* द कम्यूनिकेटर्स कमेंट्री, वोल्यूम 9 (वाको, टेक्ससः वर्ड बुक्स, 1984), 243. [45]लेंस्की, 760. [46]देखें रोमियों 8:28, 30; 1 कुरिं. 1:9; गला. 1:6; इफि. 4:1; 1 थिस्सलुनीकियों 2:12। [47] बाऊर, 869. [48]वाइन, अंगर, व्हाइट, 499. [49]यूनानी शब्द जिसका अनुवाद "सनातन से" (πρὸ χρόνων αἰωνίων, *प्रो क्रोनोन आयोनियन)* किया गया है उसका तीतुस 1:2 में "सनातन से" अनुवाद किया गया है। [50]पौलुस ने कहा कि यीशु "शरीर में प्रगट [फानेरोओ] हुआ" था (1 तीमु. 3:16)।

[51]इसी शब्द का प्रयोग 1 तीमुथियुस 6:14 में किया गया है। देखें तीतुस 1:3; 2:11-13; 3:4. [52]ब्रूस बी. बार्टन, डेविड आर. वीरमैन, एण्ड नील विल्सन, 1 तीमोथी, 2 तीमोथी, टाइटस, लाइफ अप्लीकेशन बाइबल कमेंट्री (व्हीटन, इलिनोयः टिंडेल हाऊस पब्लिशर्स, 1993), 166. [53]जब पौलुस ने यहाँ "मृत्यु" के बारे में कहा, तो उसके मन में शारीरिक मृत्यु का विचार था - अर्थात्, देह और आत्मा का अलग होना (याकूब 2:26)। यद्यपि, यह भी सत्य है कि यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा, उसने आत्मिक मृत्यु को - अर्थात् परमेश्वर से अलगाव को "नाश दिया" (यशा. 59:2)। [54]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाइट, 3-4. [55]बाऊर, 525. [56]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाइट, 367. [57]हेन्ड्रिक्सन, 232. [58]KJV में "to the Gentiles" ("अन्य जाति) जोड़ा गया है। यह वाक्यांश कई प्राचीन प्रतिलिपियों में पाया जाता है, जो संभवतः 1 तीमुथियुस 2:7 से उद्धृत है। इस वाक्यांश का जोड़े या घटाये जाने से इस अनुच्छेद के प्राथमिक विषय पर कोई फर्क नहीं पड़ता है। [59]यूनानी शब्द जिसका अनुवाद "प्रचारक," "प्रेरित," और "शिक्षक" किया गया है वह 1 तीमुथियुस 2:7 के संदर्भ में प्रयोग किया गया है। 1 तीमुथियुस 2:7 और यहाँ पर, पौलुस ने प्रभावशाली रूप से "मैं" (ἐγώ, *एगो*) का प्रयोग किया है। [60]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाइट, 608.

[61]उपरोक्त, 346. [62]बाऊर, 693. [63]उपरोक्त, 817. [64]यूनानी शब्द φυλάσσω (*फुलास्सो*, "रखवाली" या "बनाए रखना") 1 तीमुथियुस 5:21; 6:20 में भी पाया जाता है। [65]"सकता है" (δυνατός) का संबंध "सामर्थ या ताकत" (δύναμις, *डूनामिस)* से है, जिसका प्रयोग 1:7 में भी किया गया है। [66]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाइट, 113. [67]बाऊर, 764. [68]कुछ अंग्रेजी अनुवादों में विशिष्ट दिन को संबोधित करने के लिए "Day" के प्रथम अक्षर को "D" में लिखा गया है (NKJV; ESV)। [69]जेम्स बर्टन कॉफमैन, *कमेंट्री आन 1 & 2 थिस्सलोनियंस, 1 & 2 तीमुथियुस, टाइटस & फाइलेमोन* (आस्टीन, टेक्ससः फर्म फॉडेशन पब्लिशिंग हाऊस, 1978), 253. [70]लाइफेल्ड, 236.

[71]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाइट, 252. [72]लाइफेल्ड, 242. [73]"खरी" ὑγιαίνω (*ह्यूगियाईनो*) से उद्धृत है, जबकि "बातें" λόγος (*लोगोस*) का बहुवचन है। यह वाक्यांश 1 तीमुथियुस 6:3 में भी पाया जाता है। [74]देखें यूहन्ना 16:13; 1 कुरिं. 2:13; गला. 1:11, 12. [75]लेनस्की, 769. [76]डेविड लिप्सकॉम्ब एण्ड जे. डब्ल्यु. शेफर्ड, *ए कमेंट्री आन द न्यू टेस्टामेंट इपिस्टल्स,* खण्ड 5 (नैशविलः गॉस्पल एडवोकेट कम्पनी, 1942), 205. [77]बाऊर, 420-21. [78]उपरोक्त, 1068. [79]उपरोक्त, 504-5. [80]हेन्ड्रिकशन, 237.

[81]कुछ लोग इसको तब तक छांटते हैं जब तक कि यह "कान खुजाने वाली सुसमाचार" न बन जाए। [82]स्टॉट, 47. [83]पौलुस ने 1:5 में कहा कि "निष्कपट विश्वास . . . तीमुथियुस की नानी और माँ में भी है [*एनोइक्को*]।" [84]बार्टन, वीरमैम, एण्ड विलसन, 171. [85]देखें रोमियों 8:11, 26, 27; गला. 4:6; इफि. 2:21, 22. [86]"फिर गए" ἀποστρέφω *(अपोसट्रेफो)* से उद्धृत है जिसका प्रयोग 2 तीमुथियुस 4:4 और तीतुस 1:14 में भी किया गया है। [87]बो रैक, "*पास,*" *थियोलॉजिकल डिक्शनरी आफ द न्यू टेस्टामेंट,* संपादक गेरहार्ड किट्टल और गेरहार्ड फ्रेडरिक, अनुवाद एवं संग्रहीतकर्ता ज्योफरी डब्ल्यु. बी. ब्रोमिली (ग्रैंड रापिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1985), 797. [88]इन "हाकिमों" के बारे में डेविड एल. रॉपर, *प्रेरितों. 15-28,* ट्रूथ फॉर टूडे कमेंट्री (सीर्सी, आर्कांसासः रिसॉर्स पब्लिकेशन्स, 2001), 200-1, में चर्चा की गई है।

[89]विक्टर आर. गॉर्डन, "उनेसिफुरुस," *दि इन्टरनेशनल स्टैंडर्ड बाइबल बाइबल एनसाइक्लोपीडीया,* संशोधित संस्करण, संपादक ज्योफरी डब्ल्यु. ब्रोमिली (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1986), 3:605. [90]कुछ लोग यह मानते हैं कि उनेसिफुरुस इफिसुस का डीकन था, क्योंकि "सेवा" (διακονέω, *डियाकोनेओ)* और "डीकन" (διάκονος, *डियाकोनोस)* एक ही शब्द समूह की उत्पत्ति है।

[91]बाऊर, 939. *स्पॉडिओस* का एक रूप तीतुस 3:13 में भी पाया जाता है। [92]पी. एन. हैरीसन, *पौलाइन्स एण्ड पास्टोरल* (लंदनः विलियर्स पब्लिकेशंस, 1964; पुनर्मुद्रित, यूजीन, ओरेगोनः विफ एण्ड स्टॉक पब्लिशर्स, 2016), 119. [93]यह तथ्य कि ये शब्द भूतकाल में हैं जो यह दर्शाता है कि अब उनेसिफुरुस पौलुस के साथ नहीं था और संभवतः वह अब रोम में भी नहीं था। [94]वाइन, अंगर, एण्ड व्हाइट, 516-17. [95]गॉर्डन पी. वाइल्स, *पॉल्स इंटरसेसरी प्रेयर्स,* सोसाइटी फॉर न्यू टेस्टामेंट स्टडीज मोनोग्राफ सीरीज, 24 (कैम्ब्रीजः कैम्ब्रीज यूनिवर्सिटी प्रेस, 1974), 45-107. [96]आयत 18 में प्रथम प्रभु का संदर्भ पुत्र से है और दूसरा पिता से है। [97]एच. सी. जी. मूल, *स्टडीज इन II तिमोथी,* क्रेगेल पॉप्युलर कमेंट्री सीरीज (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः क्रेगेल पब्लिकेशन्स, 1977), 67-68. [98]गथरी, 148. [99]गॉर्डन, 605. [100]डेमारेस्ट, 251.

[101]जेम्स थॉपसन, *इक्विप्ड फॉर चेंजः स्टडीज इन द पास्टोरल इपिस्टल्स* (अबीलीन, टेक्ससः हिलक्रेस्ट पब्लिशिंग, 1996), 112. [102]बार्टन, वीरमैन, एण्ड विल्सन, 164. [103]एलेक्जेन्डर मेक्लारेन, *II तीमोथी, टाइटस, फिलेमोन एण्ड हिब्रूज* (न्यू यॉर्कः ए. सी. आर्मस्ट्रांग एण्ड सन, 1910), 18. [104]एस. डी. गॉर्डन, *क्वाइट टॉक आन सर्विस* (शिकागोः फ्लेमिंग एच. रेवेल कम्पनी, 1906), 64-65. [105]डेनियल डब्ल्यु. व्हीटल, "I Know Whom I Have Believed," *सॉन्ग्स ऑफ़ फेथ एण्ड प्रेज़,* संकलनकर्ता और संपादक एल्टन एच. हॉवर्ड (वेस्ट मोनरो, लुसियानाः हॉवर्ड पब्लिशिंग कम्पनी, 1994)।